11

कार्ल मार्क्स
[KARL MARX]
रचनाएं एवं ऐतिहासिक महत्व
(HIS WORKS AND HISTORICAL IMPORTANCE)

कार्ल मार्क्स का जीवन परिचय
(LIFE SKETCH OF KARL MARX)

कार्ल मार्क्स का जन्म 5 मई, सन् 1818 में प्रशिया के राइन प्रान्त के त्रियेर नगर में हुआ। उसके पिता की कुल नौ संतानें थीं जिनमें मार्क्स ज्येष्ठ था। **उसके माता-पिता मध्यम परिवार के थे और यहूदी धर्म को मानने वाले थे। उनके पिता एक वकील थे।** मार्क्स जब छः वर्ष का था तब उसके माता-पिता ने यहूदी धर्म त्याग कर ईसाई धर्म ग्रहण कर लिया था।

बचपन से ही मार्क्स प्रतिभाशाली और कुशाग्र व्यक्ति थे। उसकी हाईस्कूल तक की शिक्षा त्रियेर नगर में ही हुई। जब वे 17 वर्ष के थे तो विधि की शिक्षा ग्रहण करने के लिए बोन विश्वविद्यालय में गये किन्तु एक वर्ष बाद ही उन्होंने विधि की शिक्षा छोड़ दी तथा इतिहास और दर्शनशास्त्र का अध्ययन करने के लिए बर्लिन विश्वविद्यालय चले गये। **बर्लिन विश्वविद्यालय में उस समय हीगल के विचारों का बड़ा प्रभाव था जिसका प्रभाव मार्क्स के विचारों एवं कृतियों पर भी पड़ा।** द्वन्द्वात्मक दर्शन (Dialectical Philosophy) मार्क्स ने हीगल से ही ग्रहण किया था यद्यपि उसने उसके स्वरूप को परिवर्तित कर दिया था। हीगल के अतिरिक्त मार्क्स पर एपिक्यूरस के भौतिकवाद तथा लुदविक तथा फ्यूरबेक के नास्तिक विचारों का भी अत्यधिक प्रभाव पड़ा। सन् 1841 में मार्क्स ने जेना विश्वविद्यालय से 'डेमोक्रिट्स और एपिक्यूरस के प्राकृतिक दर्शन में भेद' (The Difference between the Natural Philosophy of Democritus and Epicurus) पर डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। मार्क्स को अपने एक पड़ोसी **वेस्टफेलेन** का भी अध्ययन में बहुत सहयोग मिला। वेस्टफेलेन मार्क्स को पढ़ने के लिए पुस्तकें भी देता था तथा सांयकाल भ्रमण के समय वे दोनों महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा करते थे। **मार्क्स उन्हें अपना आध्यात्मिक गुरु मानते थे।**

विश्वविद्यालय से डिग्री लेने के बाद मार्क्स शिक्षक बनने की आशा से बोन चले गये, किन्तु सरकार की प्रतिक्रियावादी नीति ने फ्यूरबेक तथा ब्रूनो बावेर को बोन में अध्यापन कार्य से निष्कासित कर दिया। अतः मार्क्स ने भी अध्यापक बनने के विचार को त्याग दिया। उस समय राइन प्रान्त के कुछ उग्रवादी पूंजीपतियों ने जिनका वामपंथी हीगेलवादियों से सम्पर्क था, कोलोन में एक विरोधी पत्र '**राइनी समाचार पत्र**' (Rheinische Zeitung) निकाला। अक्टूबर 1842 में मार्क्स उसके सम्पादक हो गये और बोन से कोलोन चले गये। मार्क्स के सम्पादन-काल में पत्र का रुझान अधिकाधिक क्रान्तिकारी जनवादी होता गया, इसलिए सरकार ने पहले तो पत्र पर दोहरी और तिहरी सेन्सरी बैठायी, फिर 1 जनवरी, 1843 से उसे एकदम बन्द कर दिया।

सन् 1843 में मार्क्स ने जेनीफॉन वेस्टफेलेन नामक लड़की से विवाह किया। जैनी उनकी बचपन की मित्र थीं। जेनी का जन्म प्रशा के एक अभिजात परिवार में हुआ फिर भी उनसे बढ़कर समानता की भावना कभी किसी में नहीं रही होगी। वे अपने घर में और अपने कार्यस्थल पर काम की वर्दी पहने मेहनतकशों का उसी विनम्रता और शिष्टता के साथ सत्कार करती थीं, जैसे कि वे राजा-रईस हों। **बहुत-से देशों के अनेक मजदूरों**

Scanned with CamScanner

को उनकी मेहमान-नवाजी प्राप्त हुई। अपने कार्ल की अनुगामिनी बनने के लिए उन्होंने सब कुछ त्याग दिया था और घोर अभावों की घड़ी में भी उन्हें ऐसा करने का पछतावा नहीं हुआ था। प्रत्येक रचनाकार की रचना शक्ति के पीछे अक्सर कोई-न-कोई प्रेरणा पत्नी या प्रेमिका के रूप में सामान्यतः होती है। मार्क्स भी इसके अपवाद नहीं थे। **उनकी पत्नी जेनी जो उनकी मित्र, सहयोगी और बचपन की प्रेमिका भी थी, का मार्क्स को अपनी रचना में पूरा-पूरा सहयोग मिला।** मार्क्स अपनी पत्नी की बुद्धि और आलोचना-शक्ति का इतना अधिक सम्मान करते थे कि उन्हें अपनी सारी पाण्डुलिपियां दिखाते थे और उनकी राय को बड़ा महत्व देते थे। **मार्क्स की पत्नी अपने पति की पाण्डुलिपियों की प्रेस के लिए नकलें तैयार करती थीं।**

श्रीमती मार्क्स के कई बच्चे हुए उनमें से एक पुत्र एडगर और दो पुत्रियां फ्रॉक्स तथा फ्रान्सिस्का छोटी उम्र में ही उन कठिनाइयों के दौर में मर गये जो 1848 की क्रान्ति के बाद परिवार को झेलनी पड़ी। लंदन प्रवास के दौरान मार्क्स अपने परिवार के साथ दो कमरों वाले मकान में रहे। **इस दौरान वे गरीबी, रोग, मृत्यु, पीड़ा और अपमान को झेलते रहे।** जेनी ने परिचित व्यक्ति से दो पौण्ड उधार मांगकर उसके कफन की व्यवस्था की। जीवित सन्तानों में तीन पुत्रियां थीं—जेनी, एल्योनोरा तथा लौरा। **मार्क्स स्नेही, सहृदय और दयालु पिता थे।**

मार्क्स सभी यूरोपीय भाषाएं जानते थे। **जर्मन, फ्रांसीसी तथा अंग्रेजी भाषाओं में तो वे इतने सुन्दर ढंग से लिखते थे कि भाषा-पारखी मुग्ध हो उठते थे।** वे एक उक्ति बार-बार दोहराया करते थे, "**जीवन-संघर्ष में विदेशी भाषा एक हथियार है।**" भाषाओं के लिए उनकी मेधा प्रबल थी। उन्होंने रूसी भाषा का अध्ययन तब शुरू किया जब वे 50 वर्ष के हो चुके थे और इस भाषा के कठिन होने के बावजूद छः महीने में उन्होंने इतनी रूसी सीख ली थी कि वे रूसी कवियों तथा गद्य-लेखकों की कृतियों का आनन्द लेने लगे। **उन्होंने रूसी भाषा इसलिए सीखी कि सरकारी जांचों से सम्बन्धित उन दस्तावेजों को पढ़ सकें, जिनके प्रकाशन पर रूसी सरकार ने प्रतिबन्ध लगा दिया था।**

मार्क्स को गणित में भी बहुत रुचि थी जिसे सामान्यतः एक शुष्क विषय माना जाता है। बीजगणित से तो उन्हें मानसिक सान्त्वना तक प्राप्त होती थी और अपने घटनापूर्ण जीवन की अधिकतम शोकमयी घड़ियों में वे उनका सहारा लेते थे। मार्क्स की अध्ययन में गहन रुचि थी। उनकी निजी पुस्तकालय में एक हजार से अधिक पुस्तकें थीं फिर भी वे उनके अध्ययन के लिए पर्याप्त नहीं थी। इसलिए सालों तक वे ब्रिटिश म्यूजियम में बैठकर अध्ययन करते रहे। **वहां के पुस्तक भण्डार की वे बहुत सराहना करते थे।** मार्क्स के विरोधी तथा उनके व्यापक तथा गहन पाण्डित्य का सिक्का मानते थे राजनीतिक अर्थशास्त्र, इतिहास, दर्शनशास्त्र और सभी देशों के साहित्य के क्षेत्र में उनका गहन अध्ययन था। मार्क्स के दामाद लाफएयु ने मार्क्स के बारे में लिखा है, "**उसका मस्तिष्क बन्दरगाह पर खड़े हुए उस युद्धपोत के समान है, जो ईंधन से सदैव भरा रहता है तथा कुछ ही क्षणों के नोटिस पर विचारों के अनेकानेक महासागरों की ओर दौड़ पड़ता है।**"

मार्क्स को काम का व्यसन था। वे इसमें इतना डूब जाते थे कि अक्सर खाना खाना भी भूल जाते थे। वे अक्सर कई बार बुलाये जाने पर नीचे खाने के कमरे में आते और आखिरी ग्रास खाते न खाते फिर अपने अध्ययन कक्ष में पहुंच जाते। उन्होंने अपने मस्तिष्क के लिए अपने शरीर को कुर्बान कर दिया। **चिन्तन उनका सबसे बड़ा सुख था।** उनका प्रिय वाक्य था —"अच्छी तरह जानो, फिर मानो।"

1843 में "**राइनी समाचार-पत्र**" के बन्द होने के बाद मार्क्स को कुछ समय तक बेकारी में समय बिताना पड़ा। इस समय में मार्क्स इंगलैण्ड, फ्रांस, जर्मनी, अमरीका, आदि देशों के इतिहास तथा कल्पनावादी समाजवादी साहित्य विशेषतः सेण्ट साइमन और चार्ल्स फोरियर की रचनाओं का गहराई के साथ अध्ययन किया। 1843 में विवाह के बाद मार्क्स पेरिस चले गये। पेरिस में मार्क्स '**फ्रेंको जर्मन शब्द कोष**' (Franco-German Year Book) के सम्पादक बन गये, किन्तु शासन और तत्कालीन व्यवस्था-विरोधी विचारों के कारण पत्र के प्रकाशन के थोड़े समय बाद ही बन्द करना पड़ा। इस पत्र में मार्क्स ने '**कानून के आर्थिक आधार**' नामक लेख लिखा। ऐंजिल्स का एक लेख भी इस पत्र में प्रकाशित हुआ।

दोनों एक-दूसरे के विचारों से बहुत प्रभावित हुए। सितम्बर 1844 में जब फ्रेडरिक ऐंजिल्स फ्रांस आया तो उन दोनों में गहरी मित्रता हो गयी। ऐंजिल्स का व्यक्तित्व रोबिला था, वह असाधारण मस्तिष्क का मालिक था। **वह एक उद्योगपति का सुपुत्र जिसे विरासत में अपार धन सम्पत्ति प्राप्त थी। मार्क्स और ऐंजिल्स ने सम्मिलित**

Scanned with CamScanner

रूप से साम्यवादी साहित्य की रचना की। दोनों ने राजनीतिक कार्यों में एक-दूसरे का सहयोग किया। अपने शोध कार्यों एवं लेखों में एक-दूसरे की सहायता की। **यदि मार्क्स समाजवाद के सिद्धान्त को बनाने वाला था तो ऐंजिल्स उसका प्रचारक और आयोजक था।** ऐंजिल्स मार्क्स के पारिवारिक मित्र बन गये और मार्क्स की पुत्रियां उन्हें सम्मान से दूसरा पिता कहा करती थीं। मार्क्स जब भी गरीबी के कुचक्र में फंसा तो ऐंजिल्स ने उसकी आर्थिक सहायता की। **यदि ऐंजिल्स की सहायता न मिली होती तो मार्क्स आजीविका की समस्याओं से ही लड़ते रहते और विश्व को उनका समाजवादी साहित्य नहीं मिल पाता।** उनकी मित्रता के बारे में लेनिन ने लिखा है, **"प्राचीनकाल की कथाओं में हमें मित्रता के बहुत से हृदय-द्रावक उदाहरण मिलते हैं, लेकिन यूरोप का सर्वहारा वर्ग यह दावा कर सकता है कि उसके विज्ञान की रचना ऐसे दो अध्येताओं और योद्धाओं ने की थी जिनकी परस्पर मैत्री के सम्बन्ध प्राचीन समय के मानवीय मित्रता की सबसे हृदय-द्रावक कहानियों को फीका बना देते हैं।"**

पेरिस में मार्क्स प्रौधां और बाकुनिन जैसे अराजकतावादियों के सम्पर्क में आया और इसका उस पर पर्याप्त प्रभाव पड़ा। 1844 में मार्क्स को बुनकरों के विद्रोह का समर्थन करने के कारण प्रशिया सरकार ने फ्रांस की सरकार पर यह दबाव डाला की वे मार्क्स को फ्रांस से निकाल दें। 1845 से मार्क्स को पेरिस छोड़ने के आदेश दिया गया और वह जीवन की विभिन्न विपत्तियां सहन करता हुआ ब्रूसेल जाकर रहने लग गया। यहीं मार्क्स ने अपने मित्र ऐंजिल्स के साथ मिलकर '**होली फैमिली**' (Holy family) नामक पुस्तक प्रकाशित की। मार्क्स ने क्रान्तिकारी भौतिक दर्शन तथा सर्वहारा वर्ग का सैद्धान्तिक क्रान्ति के तत्व इस पुस्तक में देखे जा सकते हैं।

मार्क्स और ऐंजिल्स ने '**जर्मन विचारधारा**' (The German Ideology) नामक पुस्तक की रचना की जिसमें उन्होंने हीगल के भाववादी सिद्धान्त की बखिया उधेड़ दी और इतिहास के भौतिकवादी सिद्धान्तों का स्पष्ट निरूपण किया। साम्यवाद के दो सैद्धान्तिक स्तम्भ हैं—एक द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद और दूसरा ऐतिहासिक भौतिकवाद। इन दोनों के निर्माण में '**जर्मन विचारधारा**' नामक पुस्तक ने महत्वपूर्ण कार्य किया।

1847 में मार्क्स और ऐंजिल्स ने लन्दन में '**साम्यवादी लीग**' की स्थापना की। इस लीग के आग्रह पर दोनों ने साम्यवादी नियमों का एक वक्तव्य तैयार किया जो फरवरी 1848 में '**कम्युनिस्ट घोषणा पत्र**' (Communist Manifesto) के नाम से प्रकाशित हुआ। यह पुस्तक साम्यवादियों का धर्म ग्रन्थ कही जा सकती है। साम्यवादी घोषणा पत्र की रचना से ही वैज्ञानिक समाजवाद का युग प्रारम्भ होता है।

1848 में फ्रांस में पूंजीवादी क्रान्ति हुई, उसका प्रभाव यूरोप के अन्य देशों पर भी पड़ा। बेल्जियम सरकार क्रान्तिकारी आन्दोलन को बढ़ते देखकर आशंकित हो उठी। उसने मार्क्स को देश निकाला दे दिया। मार्क्स वहां से पुनः फ्रांस में जाकर रहने लगे और वहां फ्रांस के जनवादियों तथा मजदूर संस्थाओं से पुनः सम्पर्क स्थापित किया। फ्रांस के निम्न पूंजीवादी जनवादियों के असफल संघर्ष के बाद फ्रांस सरकार ने जून 1849 में मार्क्स को फिर देश निकाला दे दिया और अब वे लन्दन जाकर रहने लगे। उन्होंने मृत्युपर्यन्त (1883) लन्दन में ही जीवन व्यतीत किया।

1864 में मार्क्स ने लन्दन में, '**अन्तर्राष्ट्रीय श्रमिक वर्ग समुदाय**' (International Working Men's Association) का गठन किया जो विश्व में '**प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय**' (First International) के नाम से विख्यात हुआ।

लन्दन में मार्क्स ने राजनीतिक आर्थिक समीक्षा की एक पत्रिका '**न्यू राइनिश जाइटुज पोलिटिशे-एकौमोमिशे रिव्यू**' प्रकाशित की। इस पत्रिका के छः अंक 1850 में हैम्बर्ग से प्रकाशित हुए। इस पत्रिका में मार्क्स और ऐंजिल्स ने फ्रांस और जर्मनी की 1848-49 की क्रान्तियों के परिणामों पर कई लेख लिखे। **सन् 1848-50 के मध्य मार्क्स ने 'फ्रांस में वर्ग-संघर्ष' नामक अपनी पुस्तक की रचना की जिसमें सर्वहारा अधिनायकवाद के बारे में लिखा।** सन् 1851-62 तक मार्क्स ने अपना अधिकांश समय '**न्यूयार्क डेली ट्रिब्यून**' नामक प्रगतिशील पत्र के लिए व्यतीत किया। इस कार्य में भी ऐंजिल्स ने उनकी बड़ी सहायता की। इस पत्रिका के लेखों से मार्क्स की अच्छी आमदनी होने लगी और उनका परिवार आर्थिक चिन्ताओं से मुक्त हुआ।

सन् 1867 में मार्क्स का विश्व प्रसिद्ध ग्रन्थ 'पूंजी' (Das Capital) का प्रथम खण्ड प्रकाशित हुआ। इसका दूसरा व तीसरा खण्ड उनकी मृत्यु के बाद ही प्रकाशित हुआ। यह ग्रन्थ साम्यवादियों का बाइबिल माना जाता है। इसमें वैज्ञानिक समाजवाद की व्याख्या की गयी है। मानसिक परिश्रम और निर्धनता के कारण

Scanned with CamScanner

मार्क्स शारीरिक दृष्टि से दुर्बल हो गये थे। अपने प्रियजनों के आग्रह पर वे जल चिकित्सा के लिए 1874, 1875 और 1876 में कार्ल्सवदी भी गये, किन्तु प्रशिया और आस्ट्रिया की सरकारें उन्हें दण्डित करने की धमकी देती रहती थीं। अतः उन्होंने वहां जाना ही छोड़ दिया।

2 दिसम्बर, 1881 को उनकी पत्नी का निधन हो गया। इससे उन्हें भारी धक्का लगा और उनका स्वास्थ्य गिरता ही चला गया। फेफड़े की सूजन और पुरानी खांसी की चिकित्सा के लिए वे अल्जीरिया और दक्षिणी फ्रांस भी गये, किन्तु उन्हें कोई विशेष लाभ नहीं हुआ। बीमारी में मानसिक कष्ट तब और बढ़ गया जब उन्हें अपनी सबसे बड़ी पुत्री जेनी की मृत्यु का समाचार मिला। तत्पश्चात् उनकी हालत तेजी से गिरती गयी और 14 मार्च, सन् 1883 को तीसरे पहर पौने तीन बजे संसार के सबसे महान् विचारक की मृत्यु हो गई, उनके मित्र ऐंजिल्स ने पत्र लिखकर मार्क्स के मित्रों और अनुयायियों को इस दुःखद घटना की सूचना दी। उन्होंने लिखा, "**हमारी पार्टी के सबसे महान् मस्तिष्क ने सोचना बन्द कर दिया है, आज एक ऐसे दृढ़ तन्त्र हृदय ने धड़कना बन्द कर दिया जैसा मैंने पहले कभी देखा-सुना नहीं था।**" 17 मार्च, 1883 को शनिवार के दिन उन्हें लन्दन के हाईगेट कब्रिस्तान में दफनाया गया। वास्तव में यह समाधि मार्क्स परिवार की समाधि है जहां मार्क्स की पत्नी और उनके परिवार के अन्य सदस्यों को दफनाया गया। उनकी पुत्री तुस्सी ने लिखा है, "**हम सामाजिक जनवादी पीर-पैगम्बर नहीं मानते और उनकी समाधियों का भी हमारे लिए कोई अस्तित्व नहीं है। लेकिन करोड़ों लोग साभार और ससम्मान उस व्यक्ति को याद करते हैं जो उत्तरी लन्दन के उस कब्रिस्तान में दफन है और हजारों साल बाद, जब मजदूर वर्ग की आजादी की तमन्ना के रास्ते में आने वाले बर्बरता और तंगदिली अतीत की अविश्वसनीय कथाएं बन जायेंगी, तब आजाद और कृतज्ञ लोग इस कब्रिस्तान के पास नंगे सिर खड़े होकर अपने बच्चो को कहेंगे—यहां दफन है कार्ल मार्क्स।**"

वैज्ञानिक मार्क्स ने, मजदूर वर्ग के वकील मार्क्स ने क्या कुछ उपलब्ध किया, उसे न तो ताम्रपत्रों पर खुदवाने की आवश्यकता है और न दहकते शब्दों में बयान करने की। धातु या पत्थर का कोई स्मारक उसकी घोषणा नहीं करता, लेकिन सभी देशों और संसार के सभी भागों के सर्वहारा का असंख्य समुदाय उसे महसूस करता है, जानता है और मार्क्स द्वारा उन्हें दिये गये इस महामन्त्र—"दुनिया के मजदूरो एक हो।" के तहत अपनी जुझारू पातों की वृद्धि द्वारा सिद्ध करता है। "मानव जाति के लिए काम करो", यह उनका एक प्रिय कथन था।

मार्क्स की रचनाएं
(WORKS OF MARX)

मार्क्स अनेक पुस्तकों के रचियता थे, उनमें से कुछ प्रमुख इस प्रकार हैं :

(1) **हीगल की अधिकार सम्बन्धी धारणा की आलोचना की एक प्रस्तावना** (An Introduction to the Criticism of the Hegel's Philosophy of Right)—इस पुस्तक में मार्क्स ने हीगल के अधिकार सम्बन्धी दर्शन की आलोचना की है।

(2) **पवित्र परिवार** (The Holy Family, 1844)—इस ग्रन्थ की रचना में मार्क्स और ऐंजिल्स दोनों ने योग दिया है। इस ग्रन्थ में निजी सम्पत्ति को सभी आर्थिक और राजनीतिक बुराइयों की जड़ बताया गया है। इसमें सर्वहारा वर्ग के विश्वव्यापी ऐतिहासिक उद्देश्यों एवं क्रान्तिकारी भौतिकवादी दर्शन तथा सर्वहारा वर्ग की सैद्धान्तिक विचारधारा के अंकुर देखे जा सकते हैं।

(3) **दर्शन की दरिद्रता** (Poverty of Philosophy, 1847)—यह पुस्तक प्रोधां थी पुस्तक 'दरिद्रता का दर्शन' के उत्तर मे लिखी गयी। इसमें मार्क्स ने प्रोधां के आर्थिक विचारों की आलोचना की। **इस रचना में ही पहली बार द्वन्द्वात्मक और ऐतिहासिक भौतिकवाद के आधारभूत सूत्र दर्शाये गये। इसमें पूंजीवादी अर्थव्यवस्था की सारी दुर्बलताओं और कमियों का उल्लेख किया गया है।** प्रोधां ने पूंजीवादी व्यवस्था में सुधार का एक नुस्खा भी पेश किया था, किन्तु मार्क्स ने उसे तर्कहीन बताया और कहा कि पूंजीवादी समाज में शोषण, गरीबी और संकटों का रहना अनिवार्य है, इनका अन्त उसी समय सम्भव है जब पूंजीवादी उत्पादन-प्रणाली को ही समाप्त किया जाये।

(4) **साम्यवादी घोषणा-पत्र** (Communist Manifesto, 1848)—इस पुस्तक की रचना मार्क्स और ऐंजिल्स दोनों ने मिलकर की थी, यद्यपि इसमें प्रदर्शित मूल विचार मार्क्स की ही देन थे। 1847 में कम्युनिस्ट लीग ने मार्क्स को यह निर्देश दिया था कि वे कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणा-पत्र तैयार करें। **उसी के फलस्वरूप**

Scanned with CamScanner

साम्यवादी घोषणा-पत्र की रचना की गयी जो फरवरी 1848 में प्रकाशित हुआ। इस रचना में स्पष्टता और भव्यता के साथ एक नया विश्व दृष्टिकोण, सुसंगत भौतिकवाद, विकास के सर्वांगीण और गहनतम सिद्धान्त के रूप में द्वन्द्ववाद, वर्ग-संघर्ष का सिद्धान्त तथा एक नये साम्यवादी समाज के सृजनकर्ता के रूप में सर्वहारा वर्ग की क्रान्तिकारी भूमिका के बारे में विचार व्यक्त किये गये हैं। **इस घोषणा-पत्र में यह बताया गया है कि सर्वहारा वर्ग की क्रान्ति से ही पूंजीवाद का विनाश होगा और वर्गहीन समाज की स्थापना होगी।** कम्युनिस्ट घोषणा-पत्र को वैज्ञानिक समाजवाद का दस्तावेज माना जाता है। साम्यवादी घोषणा-पत्र का हिन्दी, अंग्रेजी, जर्मन और विश्व की कई अन्य भाषाओं में अनुवाद हुआ है। मूलतः यह फ्रांसीसी भाषा में लिखा गया है।

(5) **राजनीतिक अर्थ-व्यवस्था की विवेचना** (Critique of Political Economy, 1859)—इस पुस्तक में आर्थिक निर्धारणवाद अथवा इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या और अतिरिक्त मूल्य के सिद्धान्त का वर्णन किया गया है।

(6) **उद्घाटन भाषण** (Inaugural address, 1864)।

(7) **मूल्य, कीमत और लाभ** (Value, Price and Profit, 1865)

(8) **दास कैपीटल** (Das Capital, 1867)—यह पुस्तक मार्क्स का विश्वविख्यात ग्रन्थ है। उनके जीवन काल में इसका प्रथम खण्ड ही प्रकाशित हुआ था। **इसका दूसरा और तीसरा खण्ड क्रमशः 1885 और 1894 में उनके मित्र ऐंजिल्स ने प्रकाशित करवाया।** दास कैपीटल मार्क्स की एक अनुपम देन है। यह पुस्तक मार्क्स का पूर्ण विवरण प्रस्तुत करती है तथा समाजवादी साहित्य का एक प्रामाणिक ग्रन्थ एवं साम्यवादी सिद्धान्त की आधारशिला माना जाता है। **दास कैपीटल सभी देशों के समाजवादियों की पाठ्य-पुस्तक बन गयी।** समाजवादी और मजदूरवर्गी सभी अखबार दास कैपिटल के उद्धरण को प्रकाशित करने लगे। यूरोप की अनेक भाषाओं जैसे रूसी, फ्रांसीसी, अंग्रेजी में इसका अनुवाद किया गया और जर्मन, इतालवी, फ्रांसीसी, स्पेनी और डच भाषाओं में उसके अवतरण प्रकाशित किये गये। यूरोप और अमरीका में मार्क्स के विरोधियों ने जब भी उनके सिद्धान्तों का खण्डन किया तो मार्क्सवादियों ने उन्हें ऐसे जवाब दिये कि उनके मुंह बन्द हो गये। **आज दास कैपीटल नामक पुस्तक वास्तव में मजदूर वर्ग की देवदूत बन गयी है।** लेनिन ने लिखा है, "**यह ग्रन्थ ही वह मुख्य और बुनियादी रचना है जिसमें वैज्ञानिक समाजवाद की व्याख्या की गयी है।**" **ई-स्तेपानोवा** लिखते हैं, "मार्क्स की यह महान् रचना पूंजीवादी गुलामी के विरुद्ध सर्वहारा वर्ग के वर्ग संघर्ष में उसका एक शक्तिशाली सैद्धान्तिक अस्त्र है।" निःसन्देह दास कैपीटल के रूप में हमें मार्क्स के आश्चर्यजनक ओज और प्रकाण्ड ज्ञान से भरपूर मस्तिष्क के दर्शन होते हैं, यद्यपि न तो दास कैपीटल और न कोई अन्य कृति ही उनकी प्रतिभा की सारी विराटता अथवा उनके ज्ञान की सम्पूर्ण समृद्धता प्रदर्शित करती है। वे अपनी कृतियों से भी कहीं अधिक ऊंचे थे। कुछ लोग यह मानते हैं कि दास कैपीटल की शैली कठिन हो गयी है। मार्क्स ने दास कैपीटल पर 40 साल तक काम किया और वह भी ऐसा काम जिसे केवल मार्क्स ही कर सकते थे। लेकिन उसके बदले में उन्हें जो पारिश्रमिक मिला वह बहुत ही कम था। उन्होंने स्वयं ने अपने लिपिक तथा दामाद **पाल लफार्ग** को एक बार कहा था, "दास कैपीटल से उतने भी पैसे नहीं मिलेंगे, जितने सिगार मैंने उसे लिखने में फूंक डाले।" विज्ञान का विक्रय मूल्य नहीं है और पूंजीवादी समाज से यह आशा भी नहीं की जा सकती कि वह अपनी मौत की सजा कलमबन्द करने का समुचित दाम अदा करे।

(9) **फ्रांस में गृहयुद्ध** (The Civil War in France, 1870-71)।

(10) **ग्रोथा प्रोग्राम और क्रान्ति तथा प्रतिक्रान्ति** (Groatha Programmed, Revolution and Counter revolution)।

मार्क्स के विचारों पर प्रभाव
(IMPACT OF MARX'S THOUGHTS)

मार्क्स वैज्ञानिक समाजवाद का जनक है इस दृष्टि से उसकी विचारधारा मौलिक विचारधारा मानी जाती है, परन्तु यह भी उल्लेखनीय है कि मार्क्स ने अपनी विचारधारा के निर्माण में जिन भिन्न-भिन्न सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है वे उसके मौलिक सिद्धान्त नहीं थे। एलेक्जेण्डर ग्रे के अनुसार, "**यह बात निसन्देह सत्य है कि मार्क्स के विचारों का निर्माण करने वाले तत्व अनेक स्रोतों से लिए गए हैं। उसने अपनी ईंटों को कई भट्ठों से एकत्र किया, परन्तु उसने उनका उपयोग एक ऐसी इमारत का निर्माण करने के लिए किया जो स्वयं उसके अपने नमूने की है।**" मार्क्स की विचारधारा के प्रमुख स्रोत अग्रलिखित हैं :

Scanned with CamScanner

1. **हीगलवादियों के विचार**—अपने विद्यार्थी काल में मार्क्स युवा-हीगलवादियों के सम्पर्क में आया। इन लोगों में लुडविग फायरबाख, हेस, आर्नल्ड रूग, ब्रूनो तथा एडगस बावर बन्धु, कोपेन, आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। **यद्यपि फायरबाख जर्मन धर्मशास्त्री श्यालमरमारवर से प्रभावित था तथापि उसने धर्म की मानववादी व्याख्या की तथा जर्मन विज्ञानवाद की आलोचना की और भौतिकवाद का पोषण किया।**

हीगल की द्वन्द्वात्मक पद्धति ने कार्ल को सर्वाधिक प्रभावित किया। हीगल की वह दृष्टि उनके लिए महत्वपूर्ण थी जो मनुष्य के इतिहास, उसके विकास क्रम को द्वन्द्वात्मक आधार पर समझने-समझाने की कोशिश करती थी। हीगल की भांति मार्क्स ने भी यह स्वीकार किया कि ऐतिहासिक विकास की प्रक्रिया द्वन्द्वात्मक है। **हीगल की भांति मार्क्स के सामाजिक दर्शन का लक्ष्य भी दुहरा था।** सामाजिक विकास के जिस दर्शन का निर्माण इन दोनों व्यक्तियों ने किया था, उसमें यह भी शामिल था कि वे उसमें भाग लें और उसे प्रभावित करें। हीगल की भांति मार्क्स का दर्शन भी सामाजिक दर्शन था। इसमें विकास की उन प्राकृतिक अवस्थाओं का वर्णन कर दिया गया था जो द्वन्द्वात्मक पद्धति के आन्तरिक घात-प्रतिघात के फलस्वरूप उत्पन्न होती हैं।

हीगल का यह विचार था कि यूरोपीय इतिहास की चरम परिणति जर्मन राष्ट्रों के विकास में हुई है और जर्मनी यूरोप का आध्यात्मिक नेतृत्व ग्रहण करेगा। **इसके विपरीत, मार्क्स का यह विश्वास था कि सामाजिक इतिहास की चरम परिणति सर्वहारा वर्ग के उत्थान के रूप में हुई है और यह वर्ग समाज में महत्वपूर्ण स्थान ग्रहण करेगा।** हीगल के समाज दर्शन में प्रेरक शक्ति एक स्वविकासशील आध्यात्मिक सिद्धान्त है जो अपने को बारी-बारी से इतिहास प्रसिद्ध राष्ट्रों के रूप में व्यक्त करता है। इसके विपरीत, मार्क्स के दर्शन में यह प्रेरक तत्व वे स्वविकासशील उत्पादनशील शक्तियां हैं जो अपने आपको आर्थिक वितरण के बुनियादी ढंगों में तथा उनसे सम्बद्ध सामाजिक वर्गों में व्यक्त करती हैं। हीगल के लिए प्रगति का तत्व राष्ट्रों के संघर्ष में निहित था। मार्क्स के लिए यह तन्त्र सामाजिक वर्गों के विरोधाभाव में निहित था। दोनों विचारक इतिहास के प्रवाह को तर्क सम्मत ढंग से आवश्यक मानते थे। उनका विचार था कि यह प्रवाह एक सुनिश्चित योजना के अनुसार संचालित होता है और एक सुनिर्दिष्ट लक्ष्य की ओर बढ़ता है।[1] सेबाइन के अनुसार "**मार्क्स के दर्शन में कार्य करने की भी प्रेरणा थी। यह मार्क्स के दर्शन की अपनी प्रेरणा थी। जहां हीगल राष्ट्रीय देश भक्ति के भाव के प्रति अपील करता था, मार्क्स की मजदूरों की वर्ग निष्ठा के प्रति अपील सामुदायिक होती थी, वह स्वार्थ के प्रति नहीं प्रत्युत निष्ठा के प्रति अपील होती थी....।**"

2. **ब्रिटिश अर्थशास्त्रियों का शास्त्रीय चिन्तन**—मार्क्स का अन्य प्रमुख प्रेरणा स्रोत 19वीं शताब्दी के ब्रिटिश अर्थशास्त्रियों का शास्त्रीय चिन्तन था। मार्क्स का समाज अर्थशास्त्रीय चिन्तन उसी से निःसृत है। मार्क्स ने एडम स्मिथ, रिकार्डो, आदि अर्थशास्त्रियों द्वारा प्रतिपादित 'श्रम आधारित मूल्य सिद्धान्त', '**अतिरिक्त मूल्य सिद्धान्त**' आदि का पूर्ण प्रयोग किया, लेकिन उसकी दिशा बदल दी। ब्रिटिश अर्थशास्त्रियों ने उन्हें पूंजीपतियों के हित में प्रतिपादित किया था। मार्क्स ने उनका प्रयोग श्रमिकों के हित में पूंजीपतियों द्वारा किए जाने वाले शोषण का पर्दाफाश करने के लिए किया।

3. **फ्रेन्च समाजवादियों का चिन्तन**—फ्रांस में सेण्ट साइमन, चार्ल्स फूरियर, प्रूदों, आदि चिन्तकों के द्वारा जिस समाजवाद का प्रतिपादन किया गया था उसका स्वरूप यद्यपि काल्पनिक था तथापि वह अपने चरित्र में क्रान्तिकारी था। उत्पादन के साधनों के स्वामित्व का सिद्धान्त, श्रमिकों का उत्थान और उनका शोषण करने वाले वर्ग के विनाश का सिद्धान्त और वर्ग विहीन समाज की स्थापना का विचार, आदि मार्क्स ने फ्रांसीसी चिन्तन से ही ग्रहण किए थे।

सेण्ट साइमन, चार्ल्स फूरियर और राबर्ट ओवेन की विचार पद्धतियां पूर्व-मार्क्सीय समाजवादी सिद्धान्तों के इतिहास में गुणात्मकतः एक नया चरण थी। इन विचारकों ने तब तक विकसित हो चुके बुर्जुआ समाज के बहुत से असाध्य रोगों और उसे भीतर से खोखला बनाने वाले अन्तर्विरोधों को ठीक-ठीक पहचाना और उनकी तीव्र आलोचना की। इस तरह उन्होंने जैसा कि मार्क्स और एंजिल्स ने बल देते हुए कहा है, "**मजदूरों के प्रबोधन के लिए अत्यन्त मूल्यवान सामग्री मुहैया की।**"[2] एंजिल्स ने ठीक ही कहा है कि वैज्ञानिक समाजवाद 'कभी नहीं भूलेगा कि वह सेण्ट साइमन, फूरियर और आवेन के कन्धों के सहारे टिका हुआ है।'[3]

1 सेबाइन, **राजनीति दर्शन का इतिहास**, पृष्ठ 705.
2 कार्ल मार्क्स, **फ्रेडरिक एंजिल्स, संकलित रचनाएं**, खण्ड 1, भाग 1, पृष्ठ, 164.
3 कार्ल मार्क्स, **फ्रेडरिक एंजिल्स, पूर्वोक्त**, खण्ड 2, भाग 1, पृष्ठ 227.

Scanned with CamScanner

4. **सामयिक आर्थिक परिस्थितियां**—मार्क्सवादी दर्शन का जन्म यूरोप के नवीन युग के इतिहास के लिए काफी अर्थपूर्ण वर्षों में हुआ था। 19वीं शताब्दी के चौथे और पांचवें दशकों की महती सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक घटनाओं ने पहली बार और इतने प्रखर तथा नग्न रूपों में बुर्जुआ व्यवस्था की अन्तर्विरोध पूर्ण प्रकृति तथा जनविरोधी चेहरे को उद्घाटित किया था और पूंजीवाद के सामाजिक मूल्यों की सारी प्रणाली के आरम्भ हो चुके संकट को जगजाहिर बना दिया था। उन दिनों कम्युनिस्ट घोषणा पत्र के लेखकों ने लिखा था : "**आधुनिक पूंजीवादी समाज....एक ऐसे जादूगर के समान है, जिसने अपने जादू के जोर से पाताल लोक की शक्तियों को बुला तो लिया है, लेकिन अब इन्हें काबू में रखने में वह असमर्थ है।**"

ऐसा कहा जाता है कि यदि उदारवाद उभरते हुए पूंजीवादी वर्ग का आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक दर्शन था, तो मार्क्सवाद मजदूर तथा मेहनत करने वाले वर्गों के दर्शन के रूप में जन्मा। औद्योगिक क्रान्ति के दौरान, पूंजीवादी उद्योगों की प्रगति ने यूरोप में एक नव वर्ग को जन्म दिया। यह था मजदूर वर्ग—पूंजीवादी अर्थव्यवस्था का एक आवश्यक परिणाम, जो 19वीं शताब्दी में निरन्तर बढ़ता गया, जिसकी दशा इतनी दर्दनाक थी कि स्वयं पूंजीवादी लेखक तथा अन्य मानवतावादी भी इसकी ओर ध्यान देने लगे। फ्रांस की क्रान्ति तथा फ्रांस के बौद्धिकवाद के नारे, विचार, मानवीय मूल्य तथा आदर्श जब 19वीं शताब्दी में पूंजीवादी शोषण की आंधी में धुंधले पड़ने लगे, तब इन्हीं आदर्शों की मशाल को मार्क्सवाद के दर्शन ने उठाया। हीगल के द्वन्द्ववाद, फायरबाख के वस्तुवाद, फ्रांस के तर्कवाद, काल्पनिक समाजवादियों के मानवतावाद, अंग्रेज अर्थशास्त्रियों के आर्थिक विश्लेषण को इकट्ठा करके एक नव वैज्ञानिक दर्शन के रूप में ढाला जर्मन दार्शनिक कार्ल मार्क्स तथा उनके सहयोगी फ्रेडरिक एंजिल्स ने। उन्होंने पूंजीवादी शोषण खत्म करने की अपील पूंजीपतियों की अन्तरात्मा से नहीं की (जैसे सेण्ट साइमन और चार्ल्स फोरियर ने की), पूंजीपतियों के तर्क से नहीं की (जैसे राबर्ट ओवन ने की), बल्कि स्वयं मजदूर वर्ग को क्रान्तिकारी दर्शन दिया—'**दुनिया के मजदूरो एक हो जाओ, तुम्हारे पास खोने के लिए अपनी बेड़ियों के अलावा कुछ भी नहीं है तथा पाने के लिए संसार पड़ा है।**

मैक्सी ने ठीक ही लिखा है, "मार्क्स के चिन्तन के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण बात उसकी मौलिकता नहीं है वरन् उसी समन्वयकारी शक्ति है। उसने उस दार्शनिक सामग्री को ग्रहण किया जो कई वर्षों से बिखरी हुई तथा अप्रयुक्त पड़ी थी और उसे एक व्यवस्थित समग्रता में गूंथ दिया जिसने सर्वहारा आन्दोलन को एक गतिशील सिद्धान्त और कार्य करने की एक अदम्य प्रेरणा प्रदान की।"

अतः कहा जा सकता है कि **मार्क्स ने चाहे अपनी ईंटों को बहुत से स्थानों से एकत्र किया हो, परन्तु उसने साम्यवाद का जो विशाल भवन बनाया वह सर्वथा मौलिक है। उसने सर्वहारा वर्ग को तर्क संगत सिद्धान्त देकर महान् गति और शक्ति प्रदान की।** उसने साम्यवाद को वैज्ञानिक रूप प्रदान करके आक्रामक बना दिया।

कार्ल मार्क्स के प्रमुख सिद्धान्त
(MAJOR THEORIES OF KARL MARX)

कार्ल मार्क्स की विचारधारा को उनके प्रमुख सिद्धान्तों के आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है। **मार्क्स द्वारा प्रस्तुत अवधारणाएं एवं सिद्धान्त निम्नांकित हैं :**

(1) द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद
(2) इतिहास की आर्थिक व्याख्या या आर्थिक निर्धारणवाद,
(3) वर्ग-संघर्ष,
(4) अतिरिक्त मूल्य का सिद्धान्त
(5) पूंजीवादी व्याख्या का विश्लेषण और उसके भविष्य के सम्बन्ध में विचार,
(6) राज्य और शासन सम्बन्धी धारणा,
(7) प्रजातन्त्र, धर्म और राष्ट्र के सम्बन्ध में धारणा,
(8) मार्क्स की पद्धति और कार्यक्रम,
(9) साम्यवाद,
(10) सामाजिक परिवर्तन का सिद्धान्त,
(11) अलगाव का सिद्धान्त।

Scanned with CamScanner

कार्ल मार्क्स का द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद
[KARL MARX'S DIALECTIC MATERIALISM]

द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद मार्क्स के विचारों का मूल आधार है। आपके अनुसार विश्व की सभी समस्याओं के समाधान में यह हमारा पथ-प्रदर्शन करता है। **द्वन्द्ववाद की धारणा मार्क्स ने हीगल से ग्रहण की थी।** हीगल मार्क्स के गुरु एवं मार्गदर्शक थे हीगल से मार्क्स ने बहुत कुछ सीखा। जहां तक द्वन्द्वात्मक दर्शन का प्रश्न है, मार्क्स पर हीगल का स्पष्ट प्रभाव है। **हीगल ने इतिहास की जो द्वन्द्वात्मक व्याख्या की उससे मार्क्स भी प्रभावित थे।** सन् 1836 में जब मार्क्स ने बर्लिन विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया तब हीगल की मृत्यु हो चुकी थी, किन्तु हीगल द्वारा प्रतिपादित 'आत्मा' एवं द्वन्द्ववाद' से सम्बन्धित विचारों का दबदबा विश्वविद्यालय में छाया हुआ था। मार्क्स ने भी इस विश्वविद्यालय में हीगल के विचारों का गहन अध्ययन किया और आप **'युवा हीगेलवादी'** (Young Hegelian) नामक संगठन के सदस्य बन गये। मार्क्स ने हीगल के द्वन्द्ववादी दर्शन का बाह्य आवरण तो स्वीकार किया, किन्तु उसकी अन्तर्वस्तु 'आत्मा' को नहीं। **यहीं नहीं, बल्कि उन्होंने हीगल के विचारों से भिन्न विचार प्रकट किये और हीगल के दर्शन की आलोचना की। हीगल के आदर्शवादी विचारों के स्थान पर मार्क्स ने द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद का प्रतिपादन किया।** इसे समझने से पूर्व हीगल के द्वन्द्ववाद को जान लेना आवश्यक है।

हीगल का द्वन्द्ववाद
(HEGEL'S DIALECTICISM)

द्वन्द्ववाद अंग्रेजी के 'Dailectice' शब्द का हिन्दी अनुवाद है जो कि ग्रीक भाषा के शब्द 'डायलेगो' (Dialego) से बना है जिसका अर्थ है—वाद-विवाद करना, शास्त्रार्थ करना अथवा तर्क-वितर्क करना। द्वन्द्ववाद वास्तव में विरोधी व्यक्ति द्वारा प्रस्तुत तर्क में विरोधाभास बताकर तथा उसका समाधान करके सत्य तक पहुंचने की एक कला है। **प्राचीन समय में इस शब्द का प्रयोग इसी अर्थ में किया जाता था।** उस समय विद्वानों का विचार था कि किसी भी प्रकार के मत या विचार में विरोध प्रकट होना अथवा उसके विपरीत मतों का होना सत्य तक पहुंचने का सही मार्ग है। एक विषय के पक्ष और विपक्ष के मतों के संघर्ष को ही द्वन्द्व कहा जाता था। **चिन्तन की इस द्वन्द्ववादी प्रणाली का प्रयोग प्रकृति के विकास को समझने के लिए भी किया गया।** द्वन्द्ववाद की प्रक्रिया का उल्लेख हीगल ने अपनी पुस्तक **'फीलोसोफी ऑफ राइट'** में किया है। हीगल आत्मावादी या आदर्शवादी दार्शनिक थे। लुण्डविग फायरबाख हीगल और मार्क्स के बीच की कड़ी हैं। मार्क्स का द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद इन दोनों के दर्शन से सम्बन्धित एवं उद्गमित है। कुछ विद्वानों का मत है कि मार्क्स का द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद हीगल के द्वन्द्ववाद एवं फायरबाख के भौतिकवाद का समन्वय मात्र है जबकि कुछ इस बात का खण्डन करते हैं।

मानवीय इतिहास में जो कुछ हो रहा है, वास्तव में यह वह नहीं है जो हमें दिखायी देता है, परन्तु यह निरपेक्ष विचार की वास्तविकता है। दूसरे शब्दों में, हीगल के सिद्धान्त के अनुसार बाह्य विश्व आन्तरिक विचारों का ही प्रतिबिम्ब है। मानव इतिहास को अगर देखा जाए तो सभ्यता का प्रत्येक चरण एक वाद है जो कि अपूर्ण तथा अपर्याप्त विचार का सूचक है परन्तु अपूर्णतया का अर्थ है कि विचार का दूसरा पक्ष भी हो सकता है जो कि पहले चरण का विरोधी है। **इन दो विपरीत शक्तियों में संघर्ष को रोका नहीं जा सकता क्योंकि मानव मस्तिष्क और मानवीय सभ्यता विरोधी को समाधान के बिना स्वीकार नहीं करते।** वाद तथा प्रतिवाद के इस संघर्ष के परिणामस्वरूप संवाद उत्पन्न होता है जिसमें दोनों के ही तत्व पाये जाते हैं। यह संवाद एक नये संघर्ष के लिए फिर वाद का रूप ग्रहण कर लेता है तथा इस प्रकार यह क्रम निरन्तर चलता रहता है तथा मानव समाज की प्रगति भी निरन्तर द्वन्द्ववादी प्रक्रिया में होती रहती है।

मार्क्स के भौतिक द्वन्द्ववाद सम्बन्धी विचार
(MARX'S VIEWS ABOUT DIALECTICAL MATERIALISM)

मार्क्स ने हीगल के द्वन्द्ववादी विचार तो ग्रहण किये किन्तु उनमें बहुत कुछ संशोधन किया। मार्क्स ने अपनी प्रसिद्ध कृति 'दास कैपिटल' में लिखा है, **"मेरी द्वन्द्वात्मक प्रणाली हीगल की प्रणाली से केवल भिन्न ही नहीं बल्कि उसके विपरीत है....हीगल की रचनाओं में द्वन्द्ववाद अपने सिर के बल पर खड़ा है। यदि उसके रहस्यवादी लपेटों में छिपे हुए तार्किक तत्व को समझना है तो उसे पैर के बल सीधा खड़ा करना होगा....(और) मैंने उसे**

Scanned with CamScanner

पैरों के बल खड़ा कर दिया है।"[1] मार्क्स ने हीगल के इतिहास-दर्शन का जो आधारभूत तत्व था 'विचारों की प्रधानता' (Predominance of Ideas) उसे अस्वीकार कर दिया। आपने हीगल के दार्शनिक आदर्शवाद को काल्पनिक कह कर पूर्णतः अस्वीकार कर दिया।

मार्क्स कहते हैं कि तार्किक एवं श्रेष्ठ विचार की जो कल्पना हीगल ने की है, वह एक रहस्यवादी विचार है। **उसे देखा नहीं जा सकता, स्पर्श नहीं किया जा सकता।** विचार का मानव मस्तिष्क एवं व्यवहार पर क्या अच्छा और बुरा प्रभाव पड़ता है, इस बात की जांच नहीं की जा सकती। मार्क्स कहता है कि किसी विचार को देखा नहीं जा सकता, उसे स्पर्श नहीं किया जा सकता, उसकी जांच नहीं की जा सकती तो वह रहस्यमय विचार है, वैज्ञानिक नहीं। भौतिक एवं रसायन विज्ञानों की भांति ही मार्क्स सामाजिक क्षेत्र में केवल उस जगत् को वैज्ञानिक मानता है जो दिखायी देता है, जिसका स्पर्श किया जा सकता है या जिसकी जांच की जा सकती है। मार्क्स के लिए भौतिक पदार्थ—मिट्टी, पत्थर, हड्डी, मांस, आदि सर्वथा सत्य हैं, अदृश्य विचार या विश्वास नहीं। मार्क्स यह मानते हैं कि पदार्थ, प्रकृति और अस्तित्व पहले है तथा आत्मा, विचार और चेतना उसके बाद में है। भौतिकवाद का विचार यह है कि अस्तित्व प्राथमिक है और वही चेतना को निर्धारित करता है। **हीगल** के लिए '**विश्वात्मा**' **रहस्यमयी होने से अगम्य है परन्तु मार्क्स के लिए पदार्थ दृश्य होने से गम्य है।** मार्क्स कहते हैं कि निरन्तर प्रयत्नों और प्रयोगों द्वारा पदार्थ को समझा जा सकता है। मार्क्स ने हीगल के द्वन्द्वात्मक विकासवाद को तो मान्यता दी है, किन्तु उसके 'आधार' या 'कारण' अर्थात् आत्मा एवं निरपेक्ष विचार, आदि के सिद्धान्तों को पूर्णतया अस्वीकार कर दिया। मार्क्स कहते हैं कि हीगल ने उस भौतिक दुनिया की ही अवहेलना की जिसमें वे रहते थे, जिसमें उन्हें हृष्ट-पुष्ट बनने तथा जीविकोपार्जन के अन्य समस्त साधन उपलब्ध हुए, जिसके कारण उनके शरीर एवं मस्तिष्क का अस्तित्व बना रहा और उनके लिए दार्शनिक विचार व्यक्त करना सम्भव हुआ। वह तो वही वास्तविक दुनिया है जिसके कारण हीगल का दर्शन सम्भव हुआ, किन्तु हीगल ने यह मान लेने की भूल की कि उनके दर्शन के कारण ही दुनिया सम्भव हुई।

मार्क्स अपने को हीगल से नहीं जोड़ते हैं, वे लिखते हैं, "**मैं अच्छी तरह जानता हूं कि मेरे विकास की व्याख्या हीगल की व्याख्या नहीं है, यह इसलिए कि मैं एक भौतिकवादी हूं और हीगल आदर्शवादी।**" फिर भी यदि हीगल के द्वन्द्ववादी दर्शन में से यदि रहस्यवाद को निकाल दिया जाए तो यह मार्क्स का द्वन्द्वात्मक दर्शन हो जायेगा। अतः हीगल से द्वन्द्ववादी दर्शन ग्रहण करने के लिए उसके ऋणी हैं। इस सन्दर्भ में **मर्टन** ने उचित ही कहा है कि कोई भी विचारक अपने स्वयं के पांव पर खड़ा नहीं होता है। वह दूसरों के कंधों पर अपने पांव रखकर खड़ा होता है। मार्क्स जिनके कंधों पर खड़े थे, उनमें से निश्चित रूप से एक कंधा हीगल का भी था। मार्क्स ने हीगल से मूलरूप में दो बातें ग्रहण की **एक** द्वन्द्व की अवधारणा और **दूसरी** अध्ययन विधि। हीगल ने द्वन्द्व, इतिहास और मानव विकास की जिस अध्ययन विधि को अपनाया है। उसे मार्क्स ने भी अपनाया है।

मार्क्स का दर्शन द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद इसलिए कहलाता है क्योंकि इसमें प्रकृति के घटना-क्रम को समझने का तरीका द्वन्द्ववादी है। इसके अनुसार प्रकृति का घटना-प्रवाह सदा गतिशील और परिवर्तनशील है। प्रकृति के अन्दर विरोधी शक्तियों के घात-प्रतिघात के कारण ही विकास होता है।

मार्क्स का द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद विश्व को एक नये आयाम से देखता है। **ऐंजिल्स** कहते हैं कि मार्क्स का द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद दुनिया को देखने का साम्यवादी दृष्टिकोण है।

संक्षेप में, मार्क्स का **द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद यह मानता है कि विश्व का निर्माण, आत्मा, विचार या चिन्तन से नहीं वरन् भौतिक पदार्थ या वस्तु से हुआ है।** चेतना का आधार भौतिक है, पदार्थ में दो विरोधी शक्तियां पायी जाती हैं जिनके द्वन्द्व या संघर्ष से ही विश्व एवं प्रकृति का निर्माण होता है। यह पदार्थ गतिशील है, निरन्तर प्रवाहमय है। मार्क्स ने इन्हीं सतत् नियमों और प्रयोगों के आधार पर समाजवाद को एक स्वप्न के स्थान पर मानवता का विज्ञान बना दिया।

मार्क्स आदर्शवादियों की भांति यह विश्वास नहीं करते कि संसार 'निरपेक्ष विचार' या विश्वात्मा का मूर्त रूप है। मार्क्स के अनुसार तो संसार स्वयं अपनी प्रकृति से ही भौतिक है, संसार की अगणित घटनाओं

1 Karl Marx, *Capital*, Vol I, p. XXX.

Scanned with CamScanner

का आधार गतिशील भौतिक तत्व अथवा पदार्थ है जो कि अपने आन्तरिक स्वभाव द्वारा विकसित होकर कई रूपों में प्रकट होता है। **यह विकास भौतिक पदार्थ में निहित एक आन्तरिक विरोध द्वारा संचालित होता है।** घटनाओं में अन्तः सम्बन्ध तथा अन्तः निर्भरता गतिशील पदार्थों के विकास का ही एक नियम है और इसी गतिशीलता के नियम के आधार पर संसार विकसित होता है। इसके विकास के लिए विश्वात्मा की आवश्यकता नहीं होती।

मार्क्स के द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद का जो केन्द्रीय सिद्धान्त है, वह सब तरह से वैज्ञानिक है। यह द्वन्द्व प्रकृति, समाज और विचारधारा सभी में समान रूप से देखने को मिलता है। आदर्शवाद के अनुसार हमारी चेतना, विचार, प्रत्यक्ष दर्शन, उपलब्धि और अनुभूति में ही भौतिक जगत्, प्रकृति और जीव का अस्तित्व है। किन्तु मार्क्स के भौतिकवाद के अनुसार पदार्थ, प्रकृति और जीव वैषयिक वास्तविकता (Objective Reality) है जिसका अस्तित्व हमारी चेतना आदि से बाहर और उससे परे है। पदार्थ प्रमुख है, क्योंकि वह अनुभूति, विचार, चेतना का स्रोत है, चेतना गौण है क्योंकि वह पदार्थ का ही प्रतिबिम्ब मात्र है। मार्क्स लिखते हैं, **"पदार्थ चेतना की उपज नहीं है वरन् चेतना स्वयं पदार्थ की ही सर्वश्रेष्ठ उपज मात्र हैं।"** विचार (idea) को पदार्थ से, जो सोचता है, पृथक् करना असम्भव है। पदार्थ प्रत्येक प्रकार से परिवर्तनीय है।"[1]

द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के लक्षण (Characteristics of Dialectical Materialism)

(1) **द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के अनुसार प्रत्येक वस्तु गतिशील है।** परिवर्तन प्रत्येक वस्तु में होता है, कोई भी वस्तु स्थिर नहीं है। इसमें बहाव है, गति है और निरन्तरता भी। अतः जड़ता प्रकृति की दशा नहीं है। ऐंजिल्स के अनुसार मार्क्स का द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद संसार और प्रकृति में सब कुछ अस्थायी, गतिशील और परिवर्तनशील मानता है। यह प्रत्येक वस्तु में जन्म और निर्वाण की दशा को देखता है। स्टालिन के अनुसार, "द्वन्द्वात्मक प्रणाली उसी को अजेय मानती है जो उग रहा हो और विकासमान हो।"[2] ऐंजिल्स लिखते हैं, **"समस्त प्रकृति छोटे से लेकर बड़े तक, बालू कण से लेकर सूर्य तक, वाहकाणु से लेकर व्यक्ति तक आने और चले जाने की एक निरन्तर स्थिति में निरन्तर प्रवाह में अनवरत गति तथा परिवर्तन की स्थिति में है।"**[3] विकास प्रकृति का नियम है और यह विकास पदार्थ की आन्तरिक विशेषताओं के कारण होता है। द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के अनुसार पदार्थ निष्क्रिय (Passive) न होकर सक्रिय (Active) होता है, इस प्रकार मार्क्स का द्वन्द्ववाद विचारों की अपेक्षा भौतिक वस्तुओं को अधिक महत्व देता है तथा विकास प्रक्रिया का आधार भौतिक पदार्थों में आन्तरिक विरोध को मानता है। मार्क्स का मत है कि किसी भी वस्तु में दो तत्व मौजूद होते हैं। एक वस्तु की निरन्तरता को बनाए रखता है और दूसरा तत्व निरन्तरता का विरोध करता है। पदार्थ में इन दोनों शक्तियों का संघर्ष चलता रहता है और यह संघर्ष ही पदार्थ को आगे बढ़ाता है। **द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के अनुसार पदार्थ ठीक उसी प्रकार गतिशील होता है जिस प्रकार हीगल का निरपेक्ष विचार गतिशील था।** अतः विश्व तथा उसकी प्रकृति को समझने के लिए उसकी गतिशीलता को दृष्टि में रखना होगा। मार्क्स सारे जगत् को इसी संघर्ष और गतिशीलता के सन्दर्भ में देखता है।

(2) द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के अनुसार **विकास सदैव पदार्थों में अन्तर्विरोध एवं मतभेदों के पारस्परिक संघर्षों के कारण ही होता है। पूंजीवाद में ही पूंजीवाद के विनाश के बीज हैं।**

(3) **पदार्थ विश्व का मूल है और एक वास्तविकता है।** समस्त विश्व पदार्थ से निस्रोत है। अन्तिम वास्तविकता भौतिक जगत् है न कि आत्मा का विचार। चेतना कोई प्रभावशाली तत्व न होकर पदार्थ के अधीन है। मनुष्य में जो भी चेतना है वह इस पदार्थ के कारण ही है। पदार्थ ही पहली और अन्तिम वास्तविकता है। **चेतना के स्वरूप को पदार्थ निश्चित करता है, न कि चेतना पदार्थ के स्वरूप को।** प्रत्येक वस्तु परस्पर घनिष्ट रूप से सम्बन्धित है और उनका अध्ययन उनके पारस्परिक सम्बन्धों को ध्यान में रखकर ही किया जा सकता है।

(4) **विश्व का विकास संघर्ष की प्रक्रिया द्वारा होता है** क्योंकि यह संघर्ष ही विकास का मूल है। संघर्ष से मुंह मोड़ना विकास के क्रम को पीछे धकेलना है। संघर्ष के अभाव में विकास सम्भव नहीं। संघर्ष भीतरी और बाहरी दोनों ही रूपों में होता है।

1 Karl Marx, *Selected works*, Vol. 8, pp. 332-335.
2 J.V. Stalin : *Dialectical and Historical Materialism*, p. 14
3 F. Engeles: *Anti-Disuning.*

Scanned with CamScanner

(5) **विकास सदैव टेढ़े-मेढ़े रूप में अर्थात् सर्पिल (Spiral) होता है।** विकास की प्रक्रिया में पहले तो धीरे-धीरे मात्रात्मक परिवर्तन होता रहता है, किन्तु बाद में एक वह अवस्था आती है जब यह मात्रात्मक परिवर्तन गुणात्मक परिवर्तन में बदल जाता है। उदाहणार्थ, यदि पानी को गरम किया जाय तो पहले तो वह धीरे-धीरे गरम होता है, किन्तु बाद में ऐसी अवस्था आती है जब वह भाप बन जाता है। यही द्वन्द्ववादी विकास की प्रक्रिया है। सभी समाजों में द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के विकास का यही क्रम पाया जाता है। पूंजीवादी समाज में मालिक व मजदूरों के बीच पहले तो छुट-पुट संघर्ष होते हैं, किन्तु इसकी उच्च अवस्था में श्रमिक क्रांति कर देते हैं। यह द्वन्द्व की उच्च अवस्था होती है।

(6) **द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद प्राकृतिक जगत् की आर्थिक तत्वों के आधार पर व्यवस्था करता है** और पदार्थों को समस्त विश्व की नियन्त्रक शक्ति के रूप में स्वीकार करता है। द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के अनुसार अर्थव्यवस्था ही समाज का आधार है। समाज में द्वन्द्व का कारण उत्पादन विधियां, उत्पादन सम्बन्ध और उत्पादन की शक्तियां हैं। जब उत्पादन की शक्तियों एवं उत्पादन के सम्बन्धों में साम्यता नहीं रहती तो संघर्ष उत्पन्न होता है इसके फलस्वरूप विकास भी होता है।

उपर्युक्त विशेषताओं से स्पष्ट है कि मार्क्स का द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद विश्व का आधार भौतिक तत्व या पदार्थ को मानता है जो कि अपने आन्तरिक स्वभाव द्वारा विकसित होकर अनेक रूप धारण कर लेता है। यह विकास भौतिक पदार्थ में स्वभाविक रूप से ही निहित एक आन्तरिक विरोध (Internal Contradiction) द्वारा संचालित होता है और इसमें **वाद, प्रतिवाद और संवाद** ये तीन अवस्थाएं होती हैं। **विकास की यह प्रक्रिया सीधी एवं सरल नहीं है वरन् एक बिन्दु पर आकर अकस्मात् तीव्र विस्फोट की भांति होती है।** यही स्थिति सामाजिक परिवर्तन में क्रान्ति कहलाती है जो कभी टाली नहीं जा सकती। प्रत्येक क्रान्ति के बाद नवीन सामाजिक अवस्था का जन्म होता है। प्रत्येक भौतिक पदार्थ अपने आन्तरिक स्वभाव द्वारा ही अपने प्रतिवाद को जन्म देता है जिसके परिणामस्वरूप 'वाद' और 'प्रतिवाद' में संघर्ष होता है और इसी में परिवर्तन या विकास का समस्त रहस्य छिपा हुआ है। यह नियम प्रकृति और समाज सभी पर लागू होता है। इससे द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद का क्रान्तिकारी रूप स्पष्ट होता है।

द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद यह भी बताता है कि संसार की कोई भी घटना अलग-थलग नहीं है वरन् विभिन्न घटनाओं में एक अन्तः सम्बन्ध एवं पारस्परिक निर्भरता पायी जाती है। मार्क्स ने अपने सिद्धान्त की पुष्टि इतिहास की कई घटनाओं के उदाहरण देकर की है।

मार्क्स तथा हीगल के द्वन्द्ववाद की तुलना (Comparison of Marx's and Hegel's Dialectics)

यद्यपि मार्क्स ने द्वन्द्ववाद की अवधारणा हीगल से ही ग्रहण की थी, किन्तु दोनों के द्वन्द्ववाद में पर्याप्त भिन्नता है। **दोनों में समानता केवल यह है कि दोनों ही विकास की प्रक्रिया को वाद-प्रतिवाद और संवाद की स्थितियों से गुजरती हुई मानते हैं। फिर भी दोनों के विचारों में निम्नांकित अन्तर हैं :**

(1) हीगल के द्वन्द्ववाद का आधार विचार है तथा उसका मत है कि बाह्य विश्व आन्तरिक विचारों का ही प्रतिरूप है जबकि मार्क्स के अनुसार द्वन्द्ववाद का आधार भौतिक पदार्थ है और बाह्य विश्व का प्रभाव ही आन्तरिक विचारों का निर्माण करता है। मार्क्स के लिए तो पदार्थ ही अन्तिम सत्य है। विचार से पदार्थ का जन्म नहीं होता वरन् पदार्थ से विचार का जन्म होता है। मार्क्स के ही शब्दों में, "**मनुष्य की चेतना मनुष्य के अस्तित्व को निश्चित नहीं करती अपितु उसके विपरीत मनुष्य की चेतना ही उसके सामाजिक अस्तित्व द्वारा निर्धारित होती है।**"

(2) प्रक्रिया की दृष्टि से हीगल का द्वन्द्ववाद और मार्क्स का द्वन्द्ववाद भौतिकवाद चाहे समान हों, किन्तु तत्व की दृष्टि से दोनों में भिन्नता है। हीगल की भांति ही मार्क्स भी यह मानते हैं कि विकास संघर्ष और द्वन्द्व के कारण होता है क्योंकि प्रत्येक वस्तु में विरोधी तत्व विद्यमान होते हैं और उनमें टकराव होना स्वभाविक है। **इस टकराव से, संघर्ष से ही विकास को गति मिलती है—वाद, प्रतिवाद और संवाद के रूप में।** विकास की यह प्रक्रिया टेढ़े-मेढ़े रूप में उस समय तक चलती रहती है जब तक कि अन्तिम वाद (Thesis) की स्थापना नहीं हो जाती।

(3) हीगल के लिए विकास का अन्तिम चरण निरपेक्ष विचार की अनुभूति और मार्क्स के लिए विकास का अन्तिम चरण एक वर्गहीन समाज की स्थापना है, जहां एक सुसंगठित उत्पादन व्यवस्था और आत्मनिर्भरता हो।

Scanned with CamScanner

(4) हीगल का द्वन्द्ववाद आदर्शवादी एवं काल्पनिक है जबकि मार्क्स का द्वन्द्ववाद भौतिकवादी। हीगल के लिए जगत् का मूल तत्व आत्मा है जबकि मार्क्स के लिए भौतिक तत्व। हीगल का अन्तिम लक्ष्य आध्यात्मिक व्यक्ति है जबकि मार्क्स का अन्तिम उद्देश्य वर्ग-विहीन समाज की स्थापना करना। **यद्यपि वर्ग-विहीन समाज का निर्माण भी काल्पनिक प्रतीत होता है। फिर भी यह हीगल के विचारों की तुलना में अधिक वास्तविक एवं व्यावहारिक लगता है।** मार्क्स कहते हैं कि हीगल ने अपने विचारों में वास्तविक तथा प्रयोग-सिद्ध तथ्यों पर कोई ध्यान नहीं दिया।

(5) मार्क्स ने हीगल की अपेक्षा विकास प्रक्रिया को अधिक जटिल बताया है। हीगल वाद, प्रतिवाद और संवाद की प्रक्रिया के अन्तिम चरण को आत्म चेतना की संज्ञा देता है जबकि मार्क्स उसे साम्यवाद का नाम देता है।

(6) हीगल ने प्रकृति और आत्मा को एक 'त्रय' (Triad) के आधार पर समझाने का प्रयास किया है और 'निरपेक्ष आत्मा' (Absolute Spirit) की विवेचना की है जबकि मार्क्स ने प्रत्येक वस्तु को आते-जाते, बदलते-उभरते, उलझते-टकराते, बनते-बिगड़ते इसी क्रम में देखा है।

प्रो. वेपर ने हीगल और मार्क्स के द्वन्द्ववाद की तुलना करते हुए लिखा है, हीगल के लिए जगत् का मूल-तत्व आत्मा है, मार्क्स के लिए दोनों ही पदार्थ (आत्मा और पदार्थ) आन्तरिक द्वन्द्व के कारण विकसित होते हैं। हीगल के लिए अन्तिम लक्ष्य विचार की आत्माभिव्यक्ति है, मार्क्स के लिए यह वर्ग-विहीन समाज की स्थापना है—ऐसे समाज की स्थापना जिसमें उत्पादन पर्याप्त होगा और जिसमें संघर्ष के लिए कोई स्थान नहीं होगा।''[1]

प्रो. सेबाइन हीगल और मार्क्स के विचारों का अन्तर बताते हुए लिखते हैं, ''**हीगल ने यह माना था कि यूरोप के इतिहास का अन्त जर्मन राष्ट्रों के उत्थान में होगा और उसको आशा थी कि यूरोप की सभ्यता में जर्मनी का आध्यात्मिक नेतृत्व होगा, तो मार्क्स की मान्यता थी कि इतिहास सर्वहारा वर्ग के उत्थान में समाप्त होगा और वह पूंजीवाद के विकास का मुख्य सामाजिक परिणाम होगा। हीगल के लिए ऐतिहासिक विकास का यन्त्र राष्ट्रों के बीच युद्ध था, मार्क्स के लिए यह क्रान्तिकारी वर्ग-संघर्ष था।**''

द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद की आलोचना
(CRITICISM OF DIALECTICAL MATERIALISM)

मार्क्स का द्वन्द्ववाद हीगल की तुलना में अधिक व्यावहारिक प्रतीत होता है फिर भी इसमें अनेक कमियां हैं। अनेक विद्वानों ने मार्क्स के द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद की कड़ी आलोचना की है, उनमें से कुछ निम्नांकित हैं :

(1) **आत्मा की उपेक्षा**—मार्क्स ने अपने द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद में आत्मा की उपेक्षा की है जो कि अनुपयुक्त है। यद्यपि पदार्थ हमें दृष्टिगोचर होते हैं और आत्मा हमें दिखायी नहीं देती फिर भी व्यक्ति पर आत्मा की सत्ता का प्रभाव वैयक्तिक अनुभव के आधार पर स्वयं-सिद्ध है। आत्मा की अनुभूति इन्द्रियों के ज्ञान से कहीं अधिक प्रबल होती है।

(2) **द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद अत्यधिक अस्पष्ट**—द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद अपने आप में नितान्त अस्पष्ट और थोथी दार्शनिक मान्यता है। मार्क्स ने इसका पूर्ण और आवश्यक विवेचन नहीं किया है। इस सम्बन्ध में **वेपर** का कथन है कि ''**द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद की धारणा अत्यन्त गूढ़ और अस्पष्ट है। यद्यपि मार्क्स और ऐंजिल्स के समस्त लेखन का यह आधार है लेकिन इसे कहीं पर भी स्पष्ट नहीं किया गया।**''[2] लेनिन का भी मत है कि मार्क्स के भौतिक द्वन्द्ववाद को हीगल के आदर्शवाद का अध्ययन किये बिना नहीं समझा जा सकता।

(3) **असंगतिपूर्ण धारणा**—मार्क्स की द्वन्द्ववादी धारणा असंगतिपूर्ण भी है। एक स्थान पर मार्क्स कहता है कि ''व्यक्ति अपना इतिहास स्वयं बनाता है।'' इसके अतिरिक्त मजदूरों को जाग्रत करने के लिए उसके द्वारा जिस प्रकार से उद्‌बोधन दिया गया है, उससे भी यह स्पष्ट होता है कि उसे मानवीय चेतना और क्षमता में विश्वास है। लेकिन द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया को अपनाते हुए उसके द्वारा वाद, प्रतिवाद और संवाद की पद्धति के आधार पर मानवीय इतिहास के भविष्यकालीन विकास को निर्धारित कर दिया गया है। **असंगति यह है कि यदि मानव स्वयं इतिहास का निर्माता है तो भविष्यकालीन विकास को निर्धारित कैसे किया जा सकता है।** ऐसे

1 C.L. Wayper, *Political Thought*.
2 C.L. Wayper, *Ibid.*, p.201

Scanned with CamScanner

किसी यन्त्र का अविष्कार तो अभी तक नहीं हो पाया है, जो भविष्य में मानव मस्तिष्क की समस्त गति को निर्धारित कर सके।

(4) **अत्यन्त भौतिकवादी दर्शन**—मार्क्स की विचारधारा अत्यधिक भौतिकवादी है। आपका मत है कि मानवीय चेतना भौतिक तत्वों के अधीन होती है, मानव जीवन में भौतिक सन्तुष्टि ही मानसिक सन्तुष्टि की आधारशिला है और मानव जीवन का सर्वोत्तम लक्ष्य है। **मार्क्स का यह मूल्यांकन संकुचित और त्रुटिपूर्ण है।** ऐसा कह कर आपने मानव की चेतना शक्ति को नकारा है। पदार्थ में स्वयं में कोई गति नहीं होती, वे तो चेतना शक्ति द्वारा ही संचालित होते हैं। मार्क्स जिस सर्वहारा वर्ग की क्रान्ति का पोषक है, उसका आधार भी श्रमिक वर्ग में उत्पन्न चेतना ही है जो उनमें पूंजीवाद के विरुद्ध भावना पैदा करती है।

(5) **दोषपूर्ण पद्धति**—मार्क्स द्वारा बतायी गयी वाद, प्रतिवाद और संवाद की अवस्थाएं भी दोषपूर्ण हैं काल्पनिक हैं। इतिहास एक अविरल धारा है जिसमें कोई अन्तिम अवस्था नहीं है।

(6) **खतरनाक पद्धति**—मार्क्स की द्वन्द्वात्मक पद्धति खतरनाक भी है। आप मानव को बाह्य शक्तियों अर्थात् आर्थिक शक्तियों का दास बताते हैं और उसमें इतिहास के क्रम को बदलने की शक्ति नहीं है। **यदि हम मार्क्स के इन विचारों को ग्रहण कर लें तो इसका अर्थ होगा कि मानवीय दर्शन और विचार में नये समाज की कल्पना का कोई स्थान नहीं है।** इस प्रकार मार्क्स हमें एक प्रकार के भाग्यवाद से निकाल कर दूसरे प्रकार के भाग्यवाद की ओर ले जाता है।

(7) **मानवीय इतिहास केवल उत्थान की कहानी नहीं**—द्वन्द्वात्मकवाद की एक त्रुटि यह भी है कि यह इतिहास को सदैव उन्नति की ओर बढ़ने वाला मानता है जबकि मानवीय इतिहास उत्थान और पतन दोनों की कहानी है।

(8) **अनुउपयुक्त उदाहरण**—भौतिक द्वन्द्ववाद को स्पष्ट करने के लिए मार्क्स द्वारा दिये गये उदाहरण भी अनुपयुक्त हैं। जैसे आप बर्फ को पानी का विरोधी बताते हैं जो कि उचित नहीं है। ये परस्पर विरोधी नहीं हैं वरन् एक ही वस्तु की दो भिन्न अवस्थाएं हैं।

द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद का महत्व, उद्देश्य एवं उपयोगिता
(IMPORTANCE, AIMS AND UTILITY OF DIALECTICAL MATERIALISM)

मार्क्स ने द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के सिद्धान्त का प्रतिपादन कुछ उद्देश्यों को लेकर किया था, उनमें से कुछ निम्नांकित हैं :

(1) **पूंजीवाद का अन्त एवं समाजवाद की स्थापना**—मार्क्स द्वन्दात्मक विकासवाद के आधार पर यह सिद्ध करना चाहते थे कि पूंजीवादी समाज का विनाश अनिवार्य हैं क्योंकि इसके विरोध के बीज इसमें ही अन्तर्निहित हैं। द्वन्द्वात्मक विकासवाद यह मानता है कि समाज गतिशील और परिवर्तनशील है, पुरातन का विनाश और नवीन का उद्भव ही विकास का नियम है। इसलिए पूंजीवाद, निजी सम्पत्ति, शोषण, जमींदारों के अधीन किसानों की परतन्त्रता और पूंजीपतियों के अधीन श्रमिकों की पराधीनता भी चिरस्थायी नहीं हो सकती। एक न एक दिन पूंजीवादी व्यवस्था का स्थान समाजवादी व्यवस्था अवश्य ले लेगी जिस प्रकार से सामन्तवाद का स्थान पूंजीवाद ने ले लिया था।

(2) **मजदूर क्रान्ति का आह्वान एवं औचित्य**—द्वन्दात्मक प्रणाली के आधार पर ही मार्क्स ने मजदूर क्रान्ति और समाजवादी क्रान्ति को आवश्यक एवं उचित ठहराया है। यद्यपि परिवर्ततन के नियमों के अनुसार समाजवाद तो आना ही है, किन्तु क्रान्ति के द्वारा उसे शीघ्र लाया जा सकता है और पूंजीवाद को समाप्त किया जा सकता है।

(3) **परिवर्तन के बारे में जानकारी प्रदान करता है**—मार्क्स का द्वन्द्ववाद हमें विश्व में परिवर्तन के बारे में जानकारी प्रदान करता है। यह हमें परिवर्तन या विकास की प्रक्रिया के विभिन्न स्तरों, उनके पारस्परिक सम्बन्धों एवं कारणों को भी बताता है। **यह हमारा ध्यान इस बात की ओर भी आकर्षित करता है कि संसार में किसी भी घटना का पृथक् और स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं है वरन् सभी घटनाएं परस्पर सम्बन्धित और अन्तर्निर्भर हैं।** इसलिए इतिहास या समाज व्यवस्था का अध्ययन इससे सम्बन्धित घटनाओं की एक-दूसरे के और पारस्परिक निर्भरता के सन्दर्भ में ही किया जाना चाहिए। चूंकि संसार की प्रत्येक वस्तु परिवर्तनीय है, अतः किसी भी घटना, नियम या वस्तु को चिरस्थायी, शाश्वत, निरपेक्ष और अन्तिम मानना उचित नहीं है।

Scanned with CamScanner

(4) **वर्ग-संघर्ष की अनिवार्यता**—द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के आधार पर ही मार्क्स ने समाज में पाये जाने वाले दो वर्गों—पूंजीपति वर्ग एवं श्रमिक वर्ग के संघर्ष को अनिवार्य माना। इन दोनों ही वर्गों के हित अलग-अलग हैं अतः वे अपने हितों की रक्षा के लिए अनिवार्य रूप से परस्पर संघर्ष करते हैं। यही द्वन्द्ववाद का नियम भी है।

(5) **पूंजीपतियों के लिए चेतावनी सूचक**—मार्क्स ने अपनी कृति **'दास कैपिटल'** में लिखा है कि हीगल के समय में द्वन्द्ववाद अपने रहस्यात्मक स्वरूप में एक फैशन की तरह प्रत्येक चीज पर लागू कर दिया जाता था, किन्तु अपने तार्किक स्वरूप में (अर्थात् वैज्ञानिक भौतिकवाद के रूप में) वह पूंजीपतियों और अपने समर्थकों के लिए एक चेतावनी के रूप में काम करने लगा है, क्योंकि द्वन्द्ववाद की सहायता से जहां एक ओर विद्यमान सभी चीजों के विषय में प्रत्यक्ष बोध (Positive Understanding) सम्भव हुआ, वहां दूसरी ओर यह भी स्पष्ट हो गया कि वस्तु का एक विरोधी तत्व होता है जो कि एक स्तर पर जाकर अनिवार्य रूप से विस्फोटित होता है। यह द्वन्द्ववाद पूंजीपतियों के लिए एक चेतावनी स्वरूप इसलिए है कि यह इस सत्य को प्रकट करता है कि उनका अस्तित्व अधिक समय तक नहीं रहेगा क्योंकि परिवर्तन प्रकृति का नियम है और प्रत्येक वस्तु को एक-न-एक दिन परिवर्तन के बहाव से गुजरना ही है।

संक्षेप में, **कैरयू हण्ट** के शब्दों में यह कहा जा सकता है कि मार्क्स का द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद यद्यपि मानव विकास के इतिहास में **'मूल्यवान क्रान्तियों का दिग्दर्शन'** कराता है फिर भी उनका यह दावा उचित नहीं है कि केवल द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद ही सत्य की खोज करने की एकमात्र पद्धति है।

मार्क्स का द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद ऐतहासिक विकास के सामान्य वस्तुनिष्ठ नियमों का प्रतिपादन करता है। यह सिद्धान्त मार्क्सवादी विचारधारा का सफल दर्शन है। इसके महत्व का उल्लेख करते हुए **स्लेपानोव** लिखते हैं,**''इस प्रतिभापूर्ण खोज के कारण ही दर्शनशास्त्र प्रथम बार विज्ञान बन सका और ऐसा विज्ञान बना जो प्रकृति, विज्ञान और मानवीय चिन्तन के विकास के वस्तुगत नियमों का ठीक-ठीक प्रतिनिधित्व कर सका''**। स्पष्ट है कि **कार्ल मार्क्स का द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद का सिद्धान्त एक सामान्य विश्व-दृष्टिकोण है न कि मानव इतिहास का एक विशिष्ट सम्प्रत्यय मात्र।**

कार्ल मार्क्स की इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या (ऐतिहासिक भौतिकवाद)
(MATERIALISTIC INTERPRETATION OF HISTORY)

मार्क्स द्वारा प्रस्तुत एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या या आर्थिक व्याख्या है जिसे 'ऐतिहासिक भौतिकवाद' भी कहा जाता है। मार्क्स ने द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद की सहायता से अपने समाजवाद को एक वैज्ञानिक निश्चयात्मकता प्रदान की और इसका प्रयोग ऐतिहासिक एवं सामाजिक विकास की व्याख्या करने के लिए किया। इतिहास की द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी व्याख्या को ही उसने **'ऐतिहासिक भौतिकवाद'** (Historical Materialism) या 'इतिहास की भौतिक व्याख्या' का नाम दिया। मार्क्स द्वारा प्रतिपादित इस सिद्धान्त के नामकरण पर विचार प्रकट करते हुए प्रो. वेपर ने लिखा है, ''इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या के सिद्धान्त के अन्तर्गत मार्क्स ने जो बात कही है, उसके लिए यह नाम भ्रमपूर्ण है। इस सिद्धान्त को भौतिकवाद नहीं कहा जा सकता, क्योंकि भौतिक शब्द का अर्थ चेतनाहीन पदार्थ से होता है जबकि इस सिद्धान्त में मार्क्स ने चेतनाहीन पदार्थ की कोई बात नहीं की है। इस सिद्धान्त के अन्तर्गत मार्क्स ने सामाजिक परिवर्तन की बात कहते हुए यह कहा है कि यह परिवर्तन आर्थिक कारणों से होता है। अतः मार्क्स के सिद्धान्त का नाम **'इतिहास की आर्थिक व्याख्या'** होना चाहिए। **कोल** (Cole) भी इसे 'इतिहास की आर्थिक व्याख्या' के नाम से सम्बोधित करने के ही पक्ष में हैं।

इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या (ऐतिहासिक भौतिकवाद) का अर्थ एवं परिभाषा

इतिहास की भौतिकवादी अवधारणा का प्रयोग मार्क्स ने अपने वैज्ञानिक समाजवाद के प्रतिपादन एवं पुष्टि की दृष्टि से किया। मार्क्स से पूर्व इतिहास की व्याख्या आदर्शवादी दृष्टिकोण के आधार पर की जाती थी। उदाहरण के लिए, **अगस्ट कॉम्ट** ने मानव के बौद्धिक विकास के आधार पर समाज के विकास को भी तीन स्तरों में विभाजित किया। इसी प्रकार से हीगल ने भी मानवीय इतिहास को विचारों का ही इतिहास माना। मार्क्स ने इन विचारों का खण्डन किया। उसने हीगल से भिन्न अपने विचारों को भौतिकवादी जामा पहनाया तथा इतिहास की आर्थिक या भौतिक व्याख्या प्रस्तुत की। हीगल मानते हैं कि सम्पूर्ण जगत् में एक

Scanned with CamScanner

निरपेक्ष विचार की अभिव्यक्ति होती है तथा विचारों में परिवर्तन होने पर ही इतिहास एवं समाज में भी परिवर्तन आता है। **मार्क्स ने हीगल के विपरीत ऐतिहासिक घटनाओं की व्याख्या भौतिक पदार्थों के आधार पर की है।** वे कहते हैं कि विचार पर्यावरण को प्रभावित नहीं करते वरन् पर्यावरण ही विचारों को प्रभावित करता है।

ऐतिहासिक भौतिकवाद एक दार्शनिक विज्ञान के रूप में सामाजिक विकास के सामान्य नियमों, पहलुओं एवं प्रवृत्तियों पर अपना ध्यान केन्द्रित करता है। यह सामाजिक जीवन के सामाजिक चेतना से सम्बन्धों का भी उल्लेख करता है तथा प्रत्येक समस्या की व्याख्या इसी सह-सम्बन्ध द्वारा की जाती है। **कार्ल मार्क्स** ने इसकी परिभाषा करते हुए लिखा है, "ऐतिहासिक भौतिकवाद एक दार्शनिक विज्ञान है जिसका सम्बन्ध जीवन के सार्वभौमिक नियमों से भिन्न सामाजिक विकास के विशिष्ट नियमों से है।"

एम. सिदोरोव के शब्दों में, "**ऐतिहासिक भौतिकवाद वह दार्शनिक विद्या है जो एक अखण्ड व्याख्या के रूप में समाज का तथा उस व्यवस्था के कार्य और विकास को शामिल करने वाले मुख्य नियमों का अध्ययन करती है।** **संक्षेप में, "यह सामाजिक विकास का दार्शनिक सिद्धान्त है।"**

स्टालिन के शब्दों में, "ऐतिहासिक भौतिकवाद समाज के इतिहास का विज्ञान है।"

ऐतिहासिक भौतिकवाद की मुख्य बातों का उल्लेख मार्क्स ने अपनी प्रसिद्ध कृति 'जर्मन विचारधारा' (*German Ideology*) में किया। मार्क्स उन इतिहासकारों से सहमत नहीं है जो यह मानते हैं कि इतिहास कुछ महान् और विशेष व्यक्तियों के कार्यों का परिणाम है। वह इस मत से भी सहमत नहीं है कि प्राकृतिक या भौगोलिक पर्यावरण ही मानव के सामाजिक जीवन और उसके विकास के लिए उत्तरदायी है। **यद्यपि इनका प्रभाव मानव जीवन पर पड़ता है किन्तु इन्हें निर्णायक कारक नहीं कह सकते।** इसी प्रकार से जनसंख्यात्मक कारक भी वास्तविक कारक नहीं हैं जो इतिहास और मानव के सामाजिक जीवन को तय करते हैं। **मार्क्स कहता है कि वास्तविक कारक तो आर्थिक कारक ही हैं जो इतिहास को बनाते हैं।** मार्क्स के विचार में इतिहास राजा-महाराजा, रानी-महारानी तथा सेनापतियों और विजेताओं की कहानी और उनकी गाथाओं का गान मात्र नहीं है। उनके अनुसार इतिहास की सभी घटनाएं आर्थिक अवस्थाओं में होने वाले परिवर्तनों का परिणाम मात्र हैं। किसी भी समाज, कोई भी राजनीतिक संगठन और उसकी न्याय-व्यवस्था को समझने के लिए उसके आर्थिक ढांचे का ज्ञान प्राप्त करना नितान्त आवश्यक है। मानवीय क्रियाएं नैतिकता, धर्म, प्रकृति, जनसंख्या और राष्ट्रीयता से प्रभावित नहीं होतीं वरन् केवल आर्थिक कारकों से प्रभावित होती हैं। मार्क्स के ही शब्दों में, "**सभी सामाजिक, राजनीतिक तथा बौद्धिक सम्बन्ध, सभी धार्मिक तथा कानूनी पद्धतियां, सभी बौद्धिक दृष्टिकोण जो इतिहास के विकासक्रम में जन्म लेते हैं, वे सब जीवन की भौतिक अवस्थाओं से उत्पन्न होते हैं।**"[1]

मार्क्स के सिद्धान्त में आर्थिक निर्धारणवाद केन्द्रीय स्थिति बनाए हुए है। यह "ऐसा केन्द्र बिन्दु है जिसके चारों ओर व्यक्त एवं विवेचित किए गए विचार घूमते हैं।" सामाजिक जीवन, समाज तथा सामाजिक संस्थाओं के अध्ययन के लिए इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या का सिद्धान्त उसके द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के सिद्धान्त का ही विस्तार है।

मार्क्स के भौतिकवाद की मुख्य सामग्री मानव तथा उसके द्वारा प्रयोग किए जाने वाले वे यन्त्र हैं, जिनके द्वारा व्यक्ति अपना पोषण करता है। मार्क्स से पूर्व हॉब्स भी भौतिकवादी था परन्तु उसका भौतिकवाद यान्त्रिक होने के स्थान पर दार्शनिक अधिक था। लॉक ने सम्पत्ति को मुख्य केन्द्र माना परन्तु उसने उत्पादक क्रियाओं के स्थान पर वैध स्वामित्व पर बल दिया। **हीगल और टॉकविले ने भी मानव के मनोविज्ञान पर औद्योगिक संगठन के प्रभाव को अंकित तो किया परन्तु उन्होंने उसे अपने सिद्धान्तों का केन्द्र नहीं माना।** मार्क्स और ऐंजिल्स पहले दो दार्शनिक हैं जिन्होंने यन्त्रों की 'निर्धारित करने की क्षमता' को महत्व दिया। इन्होंने आर्थिक अवस्थाओं को महत्वपूर्ण बताकर उनकी अन्य अवस्थाओं जैसे—सांस्कृतिक, राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आदि अवस्थाओं पर प्रभाव डालने तथा उनको निर्धारित करने की क्षमता पर बल दिया है।

मार्क्स की ऐतिहासिक भौतिकवाद की इस महान् खोज ने विश्व-इतिहास के समस्त दृष्टिकोण में वास्तविक क्रान्ति ला दी, उसे एक झटके के साथ मोड़ दिया। इस खोज ने इतिहास को एक विज्ञान बना

1 Marx, quoted by Wayper, *Political Thought*, p. 204.

Scanned with CamScanner

दिया। **मार्क्स ने अपनी इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या में समस्त मानवीय इतिहास की दो आधारभूत बातों का उल्लेख किया है** :

(i) जीवित रहने के साधनों जैसे—भोजन, वस्त्र और आवास का उत्पादन, तथा (ii) सन्तानों को जन्म देना (प्रजनन) जिससे कि समाज व्यवस्था बनी रहे।

मार्क्स के ऐतिहासिक भौतिकवाद या आर्थिक निर्धारणवाद के प्रमुख पहलु
(SALIENT FEATURES OF HISTORICAL METERIALISM OF MARX'S)

(1) **भौतिक मूल्यों की आवश्यकता**—मानव ही इतिहास का निर्माता है। वह इतिहास का निर्माण तभी कर सकता है जब उसका जीवन और अस्तित्व बना रहे। मानव के अस्तित्व और जीवन के लिए यह जरूरी है कि उसे भोजन, वस्त्र और आवास की सुविधाएं प्राप्त हों जिन्हें मार्क्स **आवश्यक भौतिक मूल्य** कहता है।

(2) भोजन, वस्त्र एवं आवास अर्थात् भौतिक मूल्यों को जुटाने के लिए मानव को उत्पादन करना होता है।

(3) उत्पादन का कार्य उत्पादन की प्रणाली (mode of production) पर निर्भर है। इस उत्पादन-प्रणाली में हम उत्पादन के औजार, श्रम, उत्पादन की शक्ति और कौशल आदि को गिनते हैं।

(4) एक उत्पादन प्रणाली एक विशेष प्रकार के सम्बन्धों को जन्म देती है जो दूसरे प्रकार की उत्पादन-प्रणाली से भिन्न होते हैं। उत्पादन-प्रणाली और उत्पादन शक्ति ही मानव के सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक व बौद्धिक जीवन की क्रियाओं को तय करती है, उसी पर मानव की सरकार, कानून, कला, साहित्य और धर्म का स्वरूप निर्भर होता है।

(5) जब उत्पादन-प्रणाली और उत्पादन की शक्ति में परिवर्तन होता है तो मानव की सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, बौद्धिक सभी क्रियाओं में परिवर्तन आ जाता है। यही कारण है कि जब हस्त-चालित यन्त्र थे तो सामन्तवादी समाज था और जब वाष्प-चालित यन्त्र आए तो पूंजीवादी समाज ने जन्म लिया।

(6) उत्पादन-प्रणाली व उत्पादन की शक्ति में परिवर्तन द्वन्द्ववाद की प्रक्रिया से होता है और तब तक होता है जब तक कि उत्पादन की सर्वश्रेष्ठ अवस्था नहीं आ जाती। यह अवस्था समाजवाद की स्थापना पर ही आती है जो इतिहास के विकास का अन्तिम चरण है। इस तरह मार्क्स का ऐतिहासिक भौतिकवाद, वेपर के शब्दों में, "**एक आशावादी सिद्धान्त है जिसमें मानव की विजय होती है।**"

(7) मार्क्स भी हीगल की भांति इतिहास की अनिवार्यता में विश्वास करते हैं। वे मानते हैं कि इतिहास का निर्माण मनुष्यों के प्रयत्नों से सर्वथा स्वतन्त्र रूप में होता है। इतिहास के प्रवाह को मानव-प्रयत्नों द्वारा रोका नहीं जा सकता। इस प्रवाह में विभिन्न युगों के उत्पादन की शक्तियों के अनुकूल जिस प्रकार के सम्बन्धों की आवश्यकता होगी, वे अवश्य अवतरित होंगे। मानव के वश में यह है कि वह उनके आने में देर कर दे या उन्हें शीघ्र ले आए।

(8) **इतिहास का काल-विभाजन**—मार्क्स यह मानते हैं कि इतिहास की प्रत्येक अवस्था वर्ग-संघर्ष का इतिहास है। इतिहास की प्रत्येक घटना, प्रत्येक परिवर्तन आर्थिक शक्तियों का परिणाम है। **मार्क्स ने उत्पादन सम्बन्धों एवं आर्थिक प्रणालियों के आधार पर इतिहास को पांच युगों में बांटा है**—(i) आदिम साम्यवादी युग, (ii) दासत्व युग, (iii) सामन्तवादी युग, (iv) पूंजीवादी युग, और (v) समाजवादी युग। इनमें से तीन युग बीत चुके हैं, चौथा चल रहा है और पांचवां अब आने को है।

(i) **आदिम साम्यवादी युग**—यह इतिहास का प्रारम्भिक युग था। इस युग में पत्थर के औजार और धनुषबाण उत्पादन के मुख्य साधन थे। मानव मछली मारकर, शिकार करके और कन्दमूल-फल एकत्रित करके जीवनयापन करता था। उत्पादन के साधनों पर सामूहिक स्वामित्व था, निजी सम्पत्ति जैसी चीज नहीं थी। सब समान थे तथा शोषण की स्थिति नहीं थी, इसलिए ही मार्क्स इसे साम्यवादी अवस्था कहता है।

(ii) **दासत्व युग**—धीरे-धीरे भौतिक परिस्थितियों में परिवर्तन हुआ। अब व्यक्ति पशुपालन एवं कृषि कार्य करने लगा, दस्तकारी का उदय हुआ निजी सम्पत्ति के विचार ने जन्म लिया और श्रम-विभाजन पनपा। **जिन व्यक्तियों का भूमि और उत्पादन के साधनों पर अधिकार था, वे दूसरों को अपना दास बनाकर उनसे बलपूर्वक काम कराने लगे।** इस प्रकार दासत्व युग में स्वतन्त्रता और समानता समाप्त हो गई, समाज में स्वामी और दास दो वर्ग बने तथा दासों का शोषण प्रारम्भ हुआ और वर्ग-संघर्ष होने लगा।

Scanned with CamScanner

(iii) **सामन्तवादी युग**—इस युग में उत्पादन के साधनों पर राजाओं और सामन्तों का अधिकार हो गया, विशेषत: भूमि पर। छोटे-छोटे किसान जिन्हें अर्धदास किसान (Serfs) कहा जाता था, सामन्तों से भूमि लेकर उस पर खेती करते थे। किसान दास तो न थे किन्तु उन पर कई नियन्त्रण लाद दिए गए थे। उन्हें सामन्तों के यहां बेगार में खेती करनी होती थी और युद्ध के समय उनकी सेना में सिपाही के रूप में लड़ना पड़ता था। इन सबके बदले में सामन्त उन्हें निर्वाह के लिए कुछ वेतन या भूमि दे देता था। इस युग में शोषण भयंकर था, अत: शोषक और शोषितों में वर्ग-संघर्ष निरन्तर चलता रहा।

(iv) **पूंजीवादी युग**—इस युग का प्रादुर्भाव औद्योगिक क्रान्ति से शुरू हुआ जिसने उत्पादन के साधनों में आमूल-चूल परिवर्तन ला दिए। पूंजीपति उत्पादन के नवीन साधनों जैसे कारखानों एवं मशीनों का स्वामी हो गया और श्रमिकों द्वारा उत्पादन का कार्य कराने लगा। अब उत्पादन बड़ी मात्रा में और तीव्र गति से होने लगा। **छोटे-छोटे उद्योग-धन्धे नष्ट हो गए क्योंकि वे कारखानों में बने माल से प्रतिस्पर्द्धा नहीं कर सकते थे। अतः कुटीर उद्योगों में लगे व्यक्ति भी कारखानों में श्रमिकों के रूप में सम्मिलित हो गए।** इस प्रकार समाज की सम्पत्ति मुट्ठी भर पूंजीपतियों के हाथों में केन्द्रित हो गई और समाज में पूंजीपति एवं श्रमिक दो स्पष्ट वर्ग पनपे जो अपने-अपने हितों को लेकर परस्पर संघर्षरत हैं। इस युग में श्रमिकों का शोषण अन्य युगों से तीव्र हुआ। पूंजीवादी व्यवस्था के अनुसार ही राज्य व्यवस्था, कला, नैतिकता, साहित्य और दर्शन में भी परिवर्तन हुआ।

(v) **समाजवादी युग**—पूंजीपतियों के शोषण को समाप्त करने के लिए श्रमिक वर्ग में चेतना आएगी, वे क्रान्ति करेंगे और पूंजीपतियों को उखाड़ फेंकेंगे। इस संघर्ष में श्रमिकों की ही विजय होगी। वे समाजवाद की स्थापना करेंगे और श्रमिकों का अधिनायकत्व कायम होगा। **उत्पादन के साधनों पर राज्य का सामूहिक अधिकार होगा, तब शोषक और शोषित नहीं होंगे और वर्गविहीन समाज की स्थापना होगी।** इस युग में व्यक्ति को अपनी योग्यता के अनुसार कार्य करना होगा और उन्हें आवश्यकता के अनुरूप वस्तुएं मिलेंगी।

मार्क्स के समाजवादी समाज की अवस्था रूस, चीन और पूर्वी-यूरोपीय देशों में ही आयी है, शेष में नहीं। मार्क्स इतिहास की आर्थिक व्याख्या के आधार पर पूंजीवाद का अन्त और साम्यवाद के आगमन की सम्भावना व्यक्त करता है। वह कहता है कि प्रत्येक युग में कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जिनके पास उत्पादन के साधन होते हैं और शेष साधनविहीन। इन दोनों वर्गों में सदैव संघर्ष होता रहा है जो साम्यवादी युग में आकर समाप्त हो जाता है और वर्गविहीन समाज की स्थापना हो जाती है।

मार्क्स द्वारा प्रस्तुत इतिहास की भौतिकवादी (आर्थिक) व्याख्या की आलोचना

(CRITICISM OF MARX'S HISTORICAL MATERIALISM)

मार्क्स द्वारा प्रस्तुत इतिहास की भौतिकवादी (आर्थिक) व्याख्या के सिद्धान्त की निम्नांकित आलोचनाएं की जाती हैं :

(1) **आर्थिक तत्व पर अत्यधिक और अनावश्यक बल**—मार्क्स ने सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं वैधानिक ढांचे में परिवर्तन के लिए आर्थिक तत्वों को उत्तरदायी माना है जो अतिशयोक्तिपूर्ण है। उसने भौगोलिक, जनसंख्यात्मक और सामाजिक तत्वों की अवहेलना की है जबकि इन सभी का सामाजिक परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण हाथ होता है।

(2) **आर्थिक आधार पर सभी ऐतिहासिक घटनाओं की व्याख्या असम्भव**—मार्क्स ने सभी ऐतिहासिक घटनाओं की व्याख्या आर्थिक तत्वों के आधार पर की है किन्तु यह उचित नहीं है। गौतम बुद्ध का संन्यास, मराठों का पतन, भारत विभाजन, अरब-इजरायल युद्ध, पद्मिनी का जौहर आदि घटनाओं की आर्थिक व्याख्या नहीं की जा सकती।

(3) **संयोग के तत्व की उपेक्षा**—मार्क्स ने इतिहास की अपनी व्याख्या में संयोग के तत्व को भुला दिया है। यदि जयचन्द ने पृथ्वीराज चौहान से द्वेष के कारण गोरी को भारत पर आक्रमण के लिए आमन्त्रित न किया होता तो भारत का इतिहास ही दूसरा होता। यदि 1917 में जर्मन सरकार लेनिन को रूस में लौटने की अनुमति दे देती तो शायद रूस में जार का शासन आज भी चल रहा होता। यदि इंग्लैण्ड की महारानी ऐलिजाबेथ प्रथम ने विवाह किया होता और उसके सन्तान होती तो इंग्लैण्ड का एकीकरण नहीं हो सकता था।

Scanned with CamScanner

(4) **इतिहास के कालक्रम अनुपयुक्त**—मार्क्स ने मानव इतिहास को 5 युगों में बांटा है। उनके इस क्रम से कई विद्वान सहमत नहीं हैं। वे पूंजीवाद के बाद साम्यवादी युग आने की बात कहते हैं। किन्तु रूस और चीन में जहां साम्यवाद है, वह उस प्रकार के पूंजीवादी युग के बाद नहीं आया जिसकी कल्पना मार्क्स ने की है। ये दोनों ही कृषि-प्रधान देश थे न कि औद्योगिक दृष्टि से पूर्ण विकसित देश।

(5) **इतिहास का राज्यविहीन समाज पर आकर रुकना सम्भव नहीं**—मार्क्स का यह कहना भी अनुपयुक्त है कि इतिहास का विकास राज्यविहीन समाज के निर्माण पर रुक जाएगा। परिवर्तन तो प्रकृति का नियम है, जिस द्वन्द्ववाद के कारण अन्य युग बदले, उसी आधार पर यह युग भी तो परिवर्तित होगा किन्तु मार्क्स ने इसका कहीं कोई उल्लेख नहीं किया।

(6) मार्क्स का यह कहना भी उपयुक्त नहीं है कि आर्थिक शक्ति के द्वारा ही राजनीतिक शक्ति प्राप्त होती है। स्थिति इसके विपरीत भी हो सकती है।

मार्क्स का राज्य सिद्धान्त
(MARXIAN THEORY OF STATE)

मार्क्स ने स्वयं राज्य के सिद्धान्त पर अलग से तथा स्पष्ट रूप से नहीं लिखा है। मिलिबिन्द के शब्दों में, "**मार्क्स ने स्वयं कभी राज्य का क्रमबद्ध एवं व्यापक सिद्धान्त देने का प्रयास नहीं किया।**" च्यांग लिखते हैं, "लेनिन के 'राज्य और क्रान्ति' (1917) के प्रकाशित होने से पहले राज्य का मार्क्सवादी सिद्धान्त न केवल अर्थशास्त्र में बल्कि राजनीति और समाजशास्त्र में भी बिल्कुल उपेक्षित था।" यह सच है कि मार्क्सवादी सिद्धान्त सामाजिकशास्त्र में साधारणतया उपेक्षित ही रहा है, किन्तु आर्थिक विषयों पर मार्क्स की रचनाओं में राज्य का विवरण छिटका हुआ है। राज्य पर इनके विचार उनकी कुछ अन्य रचनाओं में भी मिलते हैं।

प्लेटो और अरस्तू की भांति राज्य को एक लोक कल्याणकारी संगठन मानने के स्थान पर मार्क्स राज्य को एक वर्ग संगठन मानता है। उसकी उत्पत्ति वर्ग संघर्ष से हुई है। यह एक दमनकारी समुदाय है जो वर्ग विभेदों को बनाए रखता है। राज्य तब तक बना रहेगा जब तक समाज में वर्ग रहेंगे। **मार्क्स का आदर्श वर्ग विहीन समाज है जिसमें 'राज्य' विलुप्त हो जाएगा और साम्यवादी समाज की स्थापना होगी। "राज्य वर्ग समाज की उपज है, उसका उदय वर्गों के उदय के साथ हुआ और वर्गों के अन्त के साथ ही उसका लोप भी हो जाएगा, यह धीरे-धीरे मुरझा जाएगा।"**

राज्य की उत्पत्ति का कारण वर्ग विभेद—राज्य की उत्पत्ति के सम्बन्ध में मार्क्स की विचारधारा सामान्य मत के सर्वथा विपरीत है। प्लेटो, अरस्तू और अनेक विचारकों का मत है कि राज्य एक स्वाभाविक और नैतिक संस्था है जो मानव जीवन के साथ ही जुड़ी हुई है, लेकिन मार्क्स राज्य को एक वर्गीय संस्था मानता है। आदिम साम्यवादी व्यवस्था में समाज के सदस्यों के बीच हितों का कोई संघर्ष नहीं था, इसलिए सम्पूर्ण समाज मिलकर अपने मामलों का प्रबन्ध स्वयं कर लेता था और राज्य का कोई अस्तित्व नहीं था, लेकिन दास युग में स्थिति बदल गई। **इस युग में स्वामियों के हाथ में 'भूमि' सम्पत्ति और उत्पादन के समस्त साधन थे और ये दासों का शोषण करते थे।** स्वामी वर्ग के सदस्यों की संख्या बहुत कम थी और बहुसंख्यक समाज के विरुद्ध अपनी स्थिति बनाए रखने के लिए उन्हें शक्ति का आश्रय लेना पड़ा। इनके द्वारा सेना, पुलिस, न्यायालय और कारागार, आदि की व्यवस्था की गई। इन संस्थाओं पर उन लोगों का अधिकार था जो शासक वर्ग के समर्थक थे। यहीं से राज्य संस्था का जन्म हुआ। एंजिल्स लिखते हैं, "**राज्य, शासन के रूप में सबसे शक्तिशाली उच्च आर्थिक वर्ग का राज्य है जो राज्य के माध्यम से, राजनीतिक रूप से भी उच्च वर्ग बन जाता है और इस प्रकार यह शोषित वर्ग के शोषण का नया हथियार है। पुराने समय का राज्य गुलामों पर शासन करने के लिए गुलामों के मालिकों का राज्य था, सामन्तवादी राज्य किसान तथा भूमिहीनों पर शासन करने के लिए कुलीन लोगों का राज्य था तथा आधुनिक प्रतिनिध्यात्मक राज्य मजदूरों पर शासन करने के लिए पूंजीपतियों का शासन है।**" एंजिल्स राज्य की उत्पत्ति वर्गों की उत्पत्ति के साथ ही मानते हैं तथा राज्य को एक आर्थिक वर्ग के हाथ में दूसरे आर्थिक वर्ग पर शोषण करने का हथियार बताते हैं। मार्क्स लिखते हैं, "राज्य सम्पत्तिशाली वर्ग का संगठन है जो सम्पत्तिहीन वर्ग से इसकी सुरक्षा करता है।" वे लिखते हैं, "राज्य आदि काल से अस्तित्व में नहीं था। ऐसे समाज भी रहे हैं जो इसके बिना थे, उनमें राज्य तथा राज्यसत्ता की कोई धारणा नहीं थी। आर्थिक

Scanned with CamScanner

विकास की निश्चित दशा में, जो समाज के वर्ग विभाजन द्वारा उत्पन्न झगड़ों के कारण पैदा हुई, राज्य की उत्पत्ति हुई जो इस झगड़े की आवश्यकता थी।''

राज्य वर्ग शोषण का यन्त्र—राज्य के उद्देश्य एवं स्वरूप के बारे में मार्क्स का विचार अन्य दार्शनिकों से काफी भिन्न है। अपनी प्रारम्भिक रचनाओं में उन्होंने हीगल के राज्य सम्बन्धी विचारों की कटु आलोचना की। हीगल यह मानते थे कि राज्य उच्च नैतिकता है तथा समाज के सारे द्वन्द्व खत्म कर देता है। **मार्क्स ने इस विचार की कटु आलोचना करते हुए कहा कि राज्य व्यक्तिगत हितों से ऊपर रहकर सामान्य हित का प्रतिनिधित्व नहीं करता बल्कि निजी सम्पत्ति का सेवक है।** मार्क्स ने यह भी माना कि राजनीतिक मुक्ति मानव की मुक्ति नहीं है, राज्य स्वतन्त्र हो सकता है बिना मनुष्य के स्वतन्त्र हुए। इस प्रकार उन्होंने अपनी प्रारम्भिक रचनाओं में स्पष्ट किया कि राज्य पूरे समाज का एक पहलू है, समाज के नीचे है तथा राज्य निजी सम्पत्ति के हितों से जुड़ा हुआ है।

मार्क्स ने राज्य के बारे में दूसरी महत्वपूर्ण बात यह कही कि ''**राज्य बिखरे हुए नागरिक समाज को संगठित नहीं करता, यह एक राजनीतिक अन्धविश्वास है कि राज्य सामाजिक जीवन को व्यवस्थित करता है। जबकि वास्तविकता यह है कि सामाजिक जीवन राज्य को संगठित रखता है। अतः इस विचार के अनुसार राज्य समाज से बाहर नहीं है बल्कि समाज की ही उपज है।**''

मार्क्स के अनुसार राज्य शासक वर्ग के हितों को सुरक्षित बनाए रखने का तथा अन्य वर्गों के शोषण करने का साधन या उपकरण मात्र है। वर्तमान पूंजीवादी व्यवस्था में राज्य पूंजीपतियों का संगठन है; इसका उद्देश्य मजदूर वर्ग का शोषण करना है, इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए यह अपनी सम्पत्ति एवं हितों की रक्षा की दृष्टि से कानूनों का निर्माण करता है। कानून भंग करने वालों को पकड़ने तथा दण्ड देने के लिए पुलिस तथा न्यायालयों की व्यवस्था करता है। एंजिल्स के शब्दों में, ''**आधुनिक राज्य—उसका स्वरूप कुछ भी हो—मूलतः एक पूंजीवादी मशीन है; पूंजीपतियों का राज्य है, समस्त राष्ट्रीय पूंजी का आदर्श मूर्तरूप है। जितना ही अधिक वह उत्पादक शक्तियों को अपने हाथ में लेता है, उतना ही वह वास्तव में राष्ट्रीय पूंजीपति बनता जाता है और उतने ही अधिक नागरिकों का वह शोषण करता है।**'' साम्यवादी घोषणा पत्र' में राज्य को 'पूंजीपतियों की कार्यकारिणी समिति' कहा गया है। ''आधुनिक राज्य की कार्यपालिका सभी पूंजीवादियों के सामान्य मामलों के प्रबन्ध के लिए एक समिति मात्र है।'' (The executive of the modern state in but a committee for the oppression of one class by another)। एंजिल्स के शब्दों में, 'राज्य एक वर्ग के द्वारा दूसरे वर्ग के दमन के लिए एक यन्त्र है' (Nothing more than a machine for the oppression of one class by another)। इस प्रकार मार्क्स और एंजिल्स के अनुसार राज्य का जन्म इतिहास की प्रक्रिया में उस समय होता है जब समाज ऐसे दो विरोधी गुटों में विभक्त हो जाता है जिनके हित परस्पर विरोधी होते हैं और जिनके हितों में कोई सामंजस्य स्थापित नहीं हो सकता। **दूसरे शब्दों में राज्य 'वर्ग संघर्ष की उत्पत्ति' है, यह ''आधारभूत आर्थिक ढांचे अर्थात् उत्पादन के सम्बन्धों पर उत्पादन के भौतिक साधनों के स्वामियों द्वारा अपनी सुरक्षा के लिए खड़ा हुआ ऊपरी ढांचा है।**''

संक्षेप में, मार्क्स के अनुसार राज्य मानव जीवन के विकास का उत्तम साधन अथवा समाज के सभी वर्गों में सामंजस्य और सन्तुलन बनाए रखने वाला, उसके अधिकारों की रक्षा करने वाला तथा उनके कल्याण में संलग्न संगठन नहीं है, अपितु इसका उद्देश्य एक विशेष वर्ग की प्रभुता को बनाए रखना तथा उसे अन्य वर्गों के शोषण की खुली छूट देना है। यह वर्ग आर्थिक उत्पादन के साधनों पर स्वामित्व स्थापित करके सेना, पुलिस और कानून द्वारा अपने वर्ग के आधिपत्य को सुदृढ़ बनाता है। ''**राज्य एक ऐसी संस्था है जो श्रमिकों के अतिरिक्त मूल्य को छीनने में पूंजीपतियों की सहायक है।**'' पूंजीवाद के हितों की रक्षा के लिए राज्य न केवल पुलिस और सैनिक शक्ति रखता है, बल्कि राज्य की न्याय प्रणाली भी इसी काम में प्रयुक्त होती है। ''जर्मन राज्य लीब्कनैक्ट को बन्दीगृह में डालता है क्योंकि वह उसकी सुरक्षा को चुनौती देती है, लेकिन उसे लीब्कनैक्ट के हत्यारों को छोड़ने में कोई कठिनाई नहीं होती।' और तो और शिक्षा एवं धर्म जैसी सांस्कृतिक संस्थाओं का प्रयोग भी श्रमिकों के दमन हेतु किया जाता है।

अन्तरिम काल में सर्वहारा वर्ग का अधिनायकवाद—मार्क्स के अनुसार पूंजीवाद का अन्त अनिवार्य है। क्रान्ति द्वारा पूंजीवादी वर्ग को नष्ट कर दिया जाएगा और सर्वहारा (श्रमजीवी) का अधिनायकत्व स्थापित हो जाएगा। वर्गहीन समाज की स्थापना में कुछ समय लगेगा और अन्तरिम काल (Transitional Period) में

Scanned with CamScanner

सर्वहारा का शासन होगा। "**पूंजीवाद के अन्त के बाद भी राज्य कुछ समय तक अस्तित्व में रहेगा और इस काल में सर्वहारा वर्ग का अधिनायकवाद स्थापित होगा।**"

'गोथा कार्यक्रम' की आलोचना' में मार्क्स एक अत्यधिक महत्वपूर्ण प्रस्थापना निरूपित करते हैं—"**पूंजीवादी और कम्युनिस्ट समाज के बीच एक के दूसरे में क्रान्तिकारी रूपान्तरण का काल होता है। इसका समवर्ती एक राजनीतिक संक्रमण काल भी है, जिसमें राज्य सर्वहारा वर्ग के क्रान्तिकारी अधिनायकत्व के सिवाय और कुछ नहीं हो सकता।**"

इस संक्रमण काल में राज्य की शक्ति का प्रयोग सर्वहारा वर्ग के द्वारा पूंजीपतियों के प्रतिरोध को कुचलने तथा पूंजीवाद के अवशेषों को समाप्त करने के लिए किया जाएगा। मार्क्स यह देखते हैं कि समाजवादी क्रान्ति के दौरान कितने विराट और कितने जटिल कार्यभार पूरे करने होंगे—शोषक वर्ग के प्रतिरोधों का दमन करना, मेहनतकश जनसाधारण के व्यापकतम समूहों को सर्वहारा के पक्ष में लाना, समाज की अर्थव्यवस्था, राजनीति, संस्कृति और सामाजिक सम्बन्धों में आमूल क्रान्तिकारी पुनर्गठन करना। इन सबको ध्यान में रखते हुए मार्क्स यहां अत्यन्त महत्वपूर्ण निष्कर्ष का क्लासिकीय सूत्र पेश करते हैं—एक पूरे संक्रमण काल की ऐतिहासिक आवश्यकता है और इस काल का **राज्य सर्वहारा अधिनायकत्व** ही होना चाहिए। **इस संक्रमण काल में हैलोवेल द्वारा प्रस्तुत रूपरेखा के अनुसार साम्यवाद का निम्नलिखित कार्यक्रम रहेगा** :

1. हर प्रकार की जमींदारी का उन्मूलन और भूमि से प्राप्त होने वाले समस्त राजस्व का सार्वजनिक लाभ के कार्यों पर खर्च किया जाना;
2. आय के साथ तेजी से बढ़ने वाला आयकर;
3. सब प्रकार के उत्तराधिकार की समाप्ति;
4. देश छोड़कर अन्य देशों में बसने वालों की और विद्रोहियों की सम्पत्ति की जब्ती;
5. सरकारी पूंजी और पूर्ण एकाधिकार से सम्पन्न राष्ट्रीय बैंक द्वारा राज्य के हाथ में उधार का केन्द्रीकरण;
6. संचार और परिवहन के साधनों का राज्य के हाथों में केन्द्रीकरण;
7. राज्य स्वामित्व वाले कारखानों और उत्पादन के साधनों का विस्तार। एक सामान्य योजना के अनुसार बंजर भूमि को खेती के योग्य बनाना और जमीन को अधिक उपजाऊ बनाने के उपाय करना;
8. हर एक के लिए काम करना समान रूप से अनिवार्य किया जाना; विशेषकर कृषि के लिए औद्योगिक सेनाएं कायम करना;
9. खेती और उद्योग का उचित समायोजन और नगरों तथा गांवों में आबादी का अधिक न्यायपूर्ण वितरण;
10. निःशुल्क सार्वजनिक स्कूली शिक्षा और बच्चों से मजदूरी कराने पर रोक।

मार्क्स इस 'सर्वहारा वर्ग के अधिनायकतत्व' को ही लोकतन्त्र मानता था। सर्वहारावर्ग को अपने आपको दलित वर्ग के नाते संगठित करना है और उसे 'शासक वर्ग की स्थिति तक' उठाना है। इसके लिए सर्वहारा को राजनीतिक दल के रूप में गठित होकर, राजनीतिक नियन्त्रण अपने हाथ में लेना होगा। मार्क्स के राज्यों में, "**अब तक की सभी राज्य व्यवस्थाएं अल्पसंख्यकों की अथवा अल्पसंख्यकों के हित के लिए विद्यमान रही हैं। सर्वहारा वर्ग का अधिनायकवाद भारी बहुसंख्या की जागृत तथा स्वतन्त्र व्यवस्था है और यह भारी बहुसंख्या के हितों के लिए है।**"

राज्य संस्था का विलोप—सर्वहारा के अधिनायकवाद की संक्रमणकालीन अवस्था के बाद मार्क्स एक ऐसी आदर्श व्यवस्था की कल्पना करता है, जिसमें राज्य का विलोप हो जाएगा। यह अवस्था वर्गविहीन समाज की होगी जिसमें राज्य की कोई आवश्यकता नहीं होगी। कम्युनिस्ट घोषणा पत्र में स्पष्ट कहा गया है—"**विकासक्रम में जब वर्गों के भेद मिट जाएंगे और सारा उत्पादन पूरे राष्ट्र के एक विशाल संघ के हाथ में संकेन्द्रित हो जाएगा, तब सार्वजनिक सत्ता अपना राजनीतिक स्वरूप खो देगी।**" एंजिल्स के शब्दों में, "राज्य का '**अन्त**' नहीं किया जाता। उसका '**लोप**' हो जाता है।"

मार्क्स की मान्यता के अनुसार जब तक समाज में वर्ग बने रहेंगे तब तक एक विशेष वर्ग की सत्ता के समर्थक राज्य की भी सत्ता बनी रहेगी, किन्तु सर्वहारा वर्ग की अधिनायकता के चरण में पूंजीपतियों के वर्ग का उन्मूलन हो जाएगा, इसके बाद समाज में वर्ग भेद की सत्ता स्वतः समाप्त हो जाएगी और सब

Scanned with CamScanner

व्यक्तियों को समानता की स्थिति प्राप्त हो जाएगी। जब समाज में कोई विशेष वर्ग नहीं रहेंगे तो उनकी सत्ता को बनाए रखने वाले राज्य की भी कोई उपयोगिता नहीं रहेगी तथा राज्य का धीरे-धीरे स्वतः लोप हो जाएगा। **इस अवस्था में मनुष्य पहली बार पूर्ण स्वतन्त्रता का उपभोग करेगा तथा उत्पादन के साधनों पर सम्पूर्ण समाज का अधिकार होगा। सब लोग अपनी योग्यता के अनुसार काम करेंगे तथा अपनी आवश्यकता के अनुसार प्राप्त करेंगे।** जो व्यक्ति काम करने योग्य नहीं होंगे, उनके लिए सामाजिक सहायता और सामाजिक बीमे की व्यवस्था होगी। इस प्रकार मार्क्स जिस तरह की साम्यवादी सामाजिक-आर्थिक संरचना की कल्पना करता है, उसमें व्यक्ति और समाज के पूरी तरह से स्वतन्त्र होने, उनकी हर तरह की तरक्की की सहूलियतें होने की कल्पना की गई है। उत्पादन के साधनों पर चन्द पूंजीपतियों का नहीं, बल्कि पूरे समाज का मालिकाना हक होता है। **मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण की गुंजाइश नहीं होती।** भूख, गरीबी, बेकारी नहीं होती। मार्क्स के शब्दों में "पुराने बुर्जुआ समाज तथा उसके वर्गों और वर्ग विरोधों के स्थान पर हम एक ऐसे समाज की स्थापना करेंगे जिसमें प्रत्येक का स्वतन्त्र विकास सभी के स्वतन्त्र विकास की आवश्यक शर्त होगी।" वस्तुतः मार्क्स ने उस समाज की कल्पना की थी जब 'राज्य' की भी जरूरत नहीं रह जाएगी। जैसे फूल सूखकर झड़ जाता है, उसी तरह 'राज्य' का व्यवस्था वृक्ष मुरझाकर समाप्त हो जाएगा। दमन करने वाली सारी एजेन्सियां भी खत्म हो जाएंगी। मानव पूर्णतः मुक्त होगा—अपना मालिक खुद। मार्क्स के राज्य के लुप्त होने सम्बन्धी विचारों को एंजिल्स ने इन शब्दों में स्पष्ट व्यक्त किया है—"**वह युग आने वाला है जब राज्य संग्रहालयों में रखी जाने योग्य प्राचीन वस्तुओं—चरखे या कांसे के कुल्हाड़े की भांति अतीतकाल की वस्तु बन जाएगी।**"

राज्य सिद्धान्त की आलोचना—मार्क्स के राज्य सिद्धान्त से स्पष्ट होता है कि राज्य का वर्ग संघर्ष के सिद्धान्त के साथ गहरा सम्बन्ध है राज्य सदैव मजदूरों का शोषण करता है; राज्य का आधार पाशविक शक्ति है, अतः इसका अन्त भी क्रान्ति (हिंसा) से ही हो सकता है। राज्य का प्रधान कार्य विशेष वर्ग के हितों को शक्ति द्वारा सुरक्षित बनाना है, अतः यह इस वर्ग को क्षति पहुंचाने वाले सभी कार्यों का दमन करता है।

आलोचकों के अनुसार मार्क्स के राज्य सिद्धान्त में कई दोष हैं। मार्क्सवादी सिद्धान्त राज्य के अधिक पूर्ण और अधिक सच्चे स्वरूप की उपेक्षा करते हुए केवल एक रोगग्रस्त राज्य का अध्ययन करना है। इस सिद्धान्त की निम्नलिखित तर्कों के आधार पर आलोचना की जाती है :

1. **राज्य मानव की भलाई करने वाली संस्था है**—मार्क्स ने राज्य को शोषण करने वाली संस्था कहा है जबकि यह देखा गया है कि राज्य तो व्यक्ति की सेवा एवं भलाई करने वाला संगठन है। राज्य का प्रधान कार्य व्यक्ति के उत्तम जीवन के लिए उपयुक्त परिस्थितियां उत्पन्न करना है। स्पेन्सर जैसा व्यक्तिवादी विचारक भी इस दृष्टि से राज्य की उपयोगिता मानता है।

2. **राज्य एक कल्याणकारी संस्था है**—मार्क्स ने राज्य को सर्वहारा वर्ग का शत्रु बताया और कहा कि राज्य द्वारा ही पूंजीपति वर्ग श्रमिकों का शोषण करता है, किन्तु वस्तुस्थिति इससे भिन्न है। पिछले लगभग 60 वर्षों से विश्व के सभी राज्यों द्वारा कल्याणकारी राज्य का विचार स्वीकार कर लिया गया है और अमरीका समेत पश्चिमी यूरोप के सभी देशों में श्रमिकों के हित में सैकड़ों कानूनों का निर्माण किया गया है। **पूंजीवाद का गढ़ समझे जाने वाले देशों में राज्य ने बेकारी, बीमारी, बुढ़ापे के बारे में विभिन्न योजनाओं द्वारा श्रमिक वर्ग की समस्याओं को हल करने का प्रयत्न किया है।** आज तो राज्य श्रमिकों के शोषण के यन्त्र के रूप में नहीं, अपितु लोककल्याण के उपकरण के रूप में कार्य कर रहा है।

3. **शान्तिपूर्ण तरीकों से परिवर्तन सम्भव**—मार्क्स के अनुसार बिना क्रान्ति और हिंसा के पूंजीवादी राज्य में परिवर्तन सम्भव नहीं है। **समाजवादी समाज की स्थापना के लिए पूंजीवादी राज्य के विनाश का एकमात्र साधन हिंसा है।** जबकि वस्तुतः इंग्लैण्ड, अमरीका और भारत जैसे देशों में शान्तिपूर्ण एवं वैध साधनों से पूंजीवादी राज्य का समाजवादी राज्य में रूपान्तरण के सफल प्रयत्न हुए है। भारत में कानून बनाकर राजाओं के विशेषाधिकार तथा जमींदारी प्रथा का उन्मूलन किया गया।

4. **राज्य के विलोप की धारणा कल्पना मात्र**—मार्क्स राज्य विहीन समाज की कल्पना करता है। वह कहता है कि धीरे-धीरे राज्य की व्यवस्था स्वयमेव समाप्त हो जाएगी। **जिस प्रकार एक फूल अपने पूर्ण विकास**

Scanned with CamScanner

के बाद स्वयमेव मुरझा जाता है, उसी प्रकार अन्त में राज्य रूपी फूल की पंखुड़ियां कुम्हलाकर गिर जाएंगी और इस संस्था का लोप हो जाएगा, किन्तु आलोचकों के अनुसार मार्क्स की भविष्यवाणी सत्य सिद्ध नहीं हुई। रूस में क्रान्ति को हुए 75 वर्ष बीत गए हैं, किन्तु राज्य का विलोप नहीं हुआ। गोर्बाचोव के सत्ता में आने के बाद तो सोवियत संघ पूंजीवादी लोकतन्त्र के मार्ग पर चल पड़ा, साम्यवादी पार्टी पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया, 'समाजवादी' शब्द को 'यू. एस. एस. आर.' के नाम से निकाल दिया गया और तो और खुली प्रतियोगी अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहन दिया जाने लगा है। सोवियत संघ के विघटन के साथ वहां साम्यवाद को भी दफना दिया गया।

मार्क्स तथा साम्यवादी कार्य पद्धति
(MARX AND PROGRAMME OF COMMUNISM)

मार्क्स के अनुसार पूंजीवाद का पतन निश्चित है, साम्यवादी क्रान्ति स्वतः होगी तथापि इसके लिए हमें निष्क्रिय होकर नहीं बैठना चाहिए। **साम्यवादी क्रान्ति को लाने के लिए यह आवश्यक है कि साम्यवादी विचारों का प्रचार किया जाए और साम्यवादी विचारों के प्रचार के लिए साम्यवादी दलों का संगठन किया जाए।**

'साम्यवादी घोषणा पत्र' (1848) **में जो कि मार्क्स एवं एंजिल्स की संयुक्त कृति है, यह इंगित किया गया है कि पूंजीवाद के विनाश के लिए साम्यवादी दलों को निम्नलिखित कार्यक्रम अपनाना चाहिए :**

1. भूमि के रूप में सम्पत्ति की व्यवस्था का अन्त किया जाए;
2. भूराजस्व का सार्वजनिक हितों के लिए उपयोग किया जाए;
3. आयकर इस प्रकार लगाया जाए कि आमदनी के साथ-साथ वह भी काफी मात्रा में बढ़ता जाए;
4. यातायात तथा संचार के साधनों का राज्य के हाथों में केन्द्रीकरण;
5. उत्तराधिकार की प्रथा का अन्त किया जाए;
6. बैंकों का राष्ट्रीयकरण, राष्ट्रीय बैंक की स्थापना;
7. भगोड़ों और विद्रोहियों की सम्पत्ति जब्त कर ली जाए;
8. कारखानों में छोटे श्रमिक बच्चों के कार्य करने पर रोक;
9. प्रत्येक व्यक्ति के लिए कार्य करना अनिवार्य हो;
10. कृषि कार्यों का उद्योग धन्धों के कार्यों के साथ सम्बन्ध स्थापित किया जाए;
11. राजकीय कारखानों तथा उत्पादन के साधनों का विस्तार;
12. शिक्षा का औद्योगिक उत्पादन के साथ सम्बन्ध जोड़ा जाए।

उपर्युक्त कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए मार्क्स ने एक विशिष्ट कार्यपद्धति पर जोर दिया जो इस प्रकार है :

1. श्रमिकों के नेतृत्व में शोषितों एवं निर्धन लोगों को संगठित करना। मार्क्स के अनुसार श्रमजीवी वर्ग ही क्रान्ति का नेतृत्व कर सकता है क्योंकि वह वर्तमान पूंजीवादी व्यवस्था का विरोधी होता है। मार्क्स के अनुसार सर्वप्रथम औद्योगिक श्रमजीवियों को संगठित करना चाहिए; श्रम संघों पर अधिकार करना चाहिए तथा हड़ताल कराके वर्ग संघर्ष को तीव्र करना चाहिए।

2. विद्यार्थियों में साम्यवादी विचारों का प्रचार करना चाहिए। विद्यार्थियों में उत्साह एवं जोश सर्वाधिक होता है, अतः वे अधिक क्रान्तिकारी होते हैं।

3. जन आन्दोलनों को अनवरत बनाए रखना चाहिए जिससे आम जनता की श्रमजीवियों एवं निर्धन लोगों के प्रति सहानुभूति उत्पन्न होती है।

4. विभिन्न देशों की परिस्थितियों का गहन अध्ययन करके उसी परिप्रेक्ष्य में समयानुकूल 'साम्यवादी कार्यक्रम' निर्धारित किया जाना चाहिए। **यदि देश गुलाम है तो अन्य दलों के साथ मिलकर उस देश की स्वतन्त्रता के लिए साम्यवादियों को प्रयत्न करना चाहिए। यदि देश स्वतन्त्र है और वहां चुनाव होते रहते हैं तो चुनाव लड़कर राजनीतिक सत्ता पर कब्जा करने का प्रयत्न करना चाहिए।** यदि चुनाव में बहुमत प्राप्त नहीं होता तो विरोधी दलों की भूमिका का निर्वाह करते हुए किसानों की शिकायतों को उजागर करना चाहिए।

Scanned with CamScanner

मार्क्स तथा क्रान्ति का सिद्धान्त
(MARX AND THEORY OF REVOLUTION)

मार्क्स सामाजिक परिवर्तन के लिए क्रान्ति को अपरिहार्य मानता था। क्रान्ति से तात्पर्य है सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था में मूलभूत परिवर्तन होना। सामाजिक क्रान्तियों से ही समाज का विकास होता है क्योंकि उनके द्वारा पुरानी प्रतिगामी सामाजिक व्यवस्था का उन्मूलन किया जाता है और उनके स्थान पर नई प्रगतिशील सामाजिक व्यवस्था की स्थापना की जाती है। मार्क्स के शब्दों में, "**नई उत्पादक शक्तियों और पुराने उत्पादक सम्बन्धों की टक्कर ही सामाजिक क्रान्ति की वस्तुगत आर्थिक बुनियाद है जिसके अन्तर्गत नई उत्पादक शक्तियों के वाहक प्रगतिशील वर्ग के वर्ग हितों के बीच टक्कर होती है। सामाजिक क्रान्ति इस टक्कर की उच्चतम अभिव्यक्ति और परिणति होती है।**"

मार्क्स ने द्वन्द्ववाद के आधार पर पूंजीवाद का विश्लेषण करते हुए यह मत व्यक्त किया कि पूंजीवाद का विध्वंस अवश्यम्भावी है क्योंकि यह स्वयं ऐसे अन्तर्विरोध तथा ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न करता है जो इसके विनाश का कारण बनती है। "**उत्पादक शक्तियों तथा सम्बन्धों के बीच अन्तर्विरोध पूंजीवादी समाज में समय-समय पर संकट पैदा करते रहते हैं। कम्युनिस्ट-क्रान्ति समाज के परम्परागत सम्बन्धों को पूरी तरह खत्म कर देती है।**" लेकिन साथ ही मार्क्स का यह भी मत था कि पूंजीवाद से समाजवाद में रूपान्तरण शान्तिमय अथवा वैज्ञानिक साधनों से सम्भव नहीं होगा क्योंकि प्रतिगामी पूंजीपति वर्ग कभी भी स्वेच्छा से उत्पादन के साधनों पर से अपना स्वामित्व नहीं छोड़ेगा और इसलिए इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए क्रान्ति के हिंसापूर्ण साधनों का प्रयोग करना पड़ेगा। मार्क्स के शब्दों में, "**नए समाजरूपी शिशु को गर्भ में धारण करने वाली हर पुरातन व्यवस्था के लिए शक्ति एक दाई है**" (Force is the midwife of old society pregnant with a new one)।

मार्क्स कई कारणों से क्रान्ति को अपरिहार्य समझता था। सर्वप्रथम, उसका द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी सिद्धान्त क्रान्ति की अनिवार्यता प्रतिपादित करता है। इसके अनुसार संसार के समस्त परिवर्तन अन्तर्विरोध के अनुसार स्वयमेव होते हैं। **पूंजीवाद के आन्तरिक विरोध का निवारण करने के लिए क्रान्ति अनिवार्य है।** द्वितीय, 1848-1851 के अनुभव ने मार्क्स को यह दर्शाया कि पूंजीपतियों के संगठित विरोध का सामना श्रमजीवी केवल शक्ति के प्रयोग से ही कर सकते हैं। उस समय फ्रांस, हंगरी, हालैण्ड, आदि देशों में क्रान्तियां इसलिए असफल हुई क्योंकि निरंकुश शासनों ने सैनिक शक्ति द्वारा श्रमजीवियों के आन्दोलन को कुचल दिया था। मार्क्स ने उस समय स्पष्ट कहा, "**मजदूर वर्ग की क्रान्ति का पहला कदम सर्वहारा वर्ग को उठाकर शासक वर्ग के आसन पर बैठाना और जनवाद के लिए होने वाली लड़ाई को जीतना है।**" तृतीय कारण मार्क्स का यह विचार था कि शासक वर्ग ने बिना संघर्ष के कभी भी अपनी सत्ता नहीं छोड़ी है, अतः शान्तिपूर्ण तरीकों से परिवर्तन लाना सम्भव नहीं है।

मार्क्स के अनुसार समाजवादी क्रान्ति तब कही जाती है जब राज्य की शक्ति पर सर्वहारा का कब्जा हो जाता है और निर्णायक उत्पादक शक्तियां मजदूर वर्ग के हाथों में केन्द्रित हो जाती है।

क्रान्ति का सिलसिला यहीं पर समाप्त नहीं होता। यह एक निरन्तर प्रक्रिया है जिसमें संक्रमण अवस्था के दौरान सर्वहारा की तानाशाही की स्थापना से राज्यहीन समाज की अन्तिम अवस्था की दिशा में अग्रसर होता है।

वर्ग एवं वर्ग-संघर्ष की अवधारणा (Concept of Class and Class struggle)

मार्क्स का मत है कि साधारणतः व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी है, किन्तु अधिक स्पष्ट रूप से वह एक वर्ग प्राणी है। **मार्क्स समाज में वर्ग निर्माण के लिए आर्थिक आधार को महत्वपूर्ण मानते हैं।** समाज में आर्थिक असमानता ही वर्गों को जन्म देती है। मार्क्स ने मानव इतिहास को चार युगों में बांटा—आदिम साम्यवादी युग, दासत्व युग, सामन्ती युग एवं पूंजीवादी युग। **प्रत्येक युग में दो वर्ग रहे हैं**—एक वह जिसका उत्पादन के साधनों पर स्वामित्व रहा है **जिसे स्वामी, बुर्जुआ या पूंजीपति कह सकते हैं**, दूसरा वह जो उत्पादन के साधनों पर स्वामित्व से वंचित रहा है, **इसे श्रमिक, मजदूर या प्रोलिटेरियट कह सकते हैं।** ये दोनों वर्ग अपने-अपने हितों की रक्षा करने के लिए सदैव संघर्षरत रहे हैं। **इसलिए मार्क्स कहता है अब तक के सभी समाजों का इतिहास वर्ग-संघर्ष का इतिहास है।**

Scanned with CamScanner

मार्क्स कहता है कि अन्य युगों की अपेक्षा पूंजीवादी युग में वर्ग संघर्ष तीव्र हो जाता है और एक समय ऐसा आता है कि श्रमिक वर्ग पूंजीवादी व्यवस्था को समाप्त कर उसके स्थान पर साम्यवादी व्यवस्था स्थापित कर देता है जिसमें शोषण और असमानता का अन्त हो जाता है। मार्क्स इस साम्यवादी समाज की स्थापना एवं पूंजीवादी दुःखों से छुटकारा पाने के लिए मजदूरों का आह्वान करता है, "**दुनिया के मजदूरो एक हो, तुम्हें तुम्हारी बेड़ियों के सिवा कुछ नहीं खोना है और पाने के लिए तुम्हारे पास सारा संसार पड़ा है।**"

अतिरिक्त मूल्य का सिद्धान्त (Theory of Surplus Value)

मार्क्स ने अपनी पुस्तक 'दास कैपिटल' में अतिरिक्त मूल्य के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। अतिरिक्त मूल्य से तात्पर्य है कि किसी वस्तु के निर्माण में जितना खर्च आता है और जितने में वह बेची जाती है, उनके बीच का अन्तर ही अतिरिक्त मूल्य है। उदाहरण के लिए एक कुर्सी का निर्माण खर्च लकड़ी, मजदूरी, रंग-रोगन आदि मिलाकर 300 रुपए आता है और वह बाजार में 500 रुपयों में बेची जाती है तो 500 – 300 = 200 रुपये अतिरिक्त मूल्य हुआ। यह 200 रुपया श्रम के कारण मिला है जिसे पूंजीपति श्रमिक को न देकर स्वयं हड़प जाता है। **चूंकि श्रमिकों के पास उत्पादन के साधनों को खरीदने की शक्ति नहीं होती अतः बाध्य होकर वे अपना श्रम पूंजीपति का बेच देते हैं और उनके श्रम से उत्पन्न अतिरिक्त मूल्य पूंजीपति की जेब में चला जाता है।** यह अतिरिक्त मूल्य ही श्रमिकों व पूंजीपतियों में संघर्ष उत्पन्न करता है तथा पूंजीवादी व्यवस्था की बुराइयों को जन्म देता है।

अलगाव का सिद्धान्त (Theory of Alienation)

मार्क्स ने 'दास कैपिटल' में अलगाव के सिद्धान्त का उल्लेख किया है। अलगाव आधुनिक पूंजीवादी व्यवस्था की देन है। वर्तमान पूंजीवादी व्यवस्था में व्यक्ति की अपने द्वारा उत्पादित वस्तुओं, श्रम, और सामाजिक सम्बन्धों से विलग हो जाने के कारण कार्य के प्रति अरुचि हो जाती है। प्राचीन समय में व्यक्ति अपने हाथों से सामान्य औजारों से उत्पादन करता था, मशीनों से नहीं। तब उसे उत्पादन से मानसिक सन्तोष प्राप्त होता था, किन्तु वर्तमान में उत्पादन उपकरणों एवं मशीनों के द्वारा होता है। उत्पादन के साधनों, पूंजी, कच्चा माल एवं उत्पादन की प्रक्रिया सभी पर पूंजीपति का अधिकार है। **श्रमिक का उस पर कोई अधिकार नहीं है। अतः वह इन सबसे अलगाव महसूस करता है। इस प्रकार पूंजीवादी व्यवस्था श्रमिकों में अलगाव की भावना पैदा करती है।** यह अलगाव वह स्वयं अपने प्रति, अपने परिवार, साथियों और समुदाय के प्रति भी महसूस करता है। यह अलगाव की भावना ही श्रमिक को उदासीन बना देती है। अतः वह आन्दोलन व संघर्ष के दौरान तोड़-फोड़ करता है। उसका जीवन निष्क्रिय हो जाता है और वह अपने संघर्ष को अकेला, निरीह और सब लोगों से पृथक् महसूस करता है।

मार्क्स के दर्शन की आलोचना
(CRITICISM OF MARX'S PHILOSOPHY)

मार्क्सवादी दर्शन की कड़ी आलोचना विभिन्न लेखकों तथा दार्शनिकों ने की है। इनमें से पूंजीवादी वर्ग के लेखक कार्ल, पॉपर, बर्नस्टीन, काउटस्की जैसे संशोधनवादी तथा कीन्स जैसे अर्थशास्त्री प्रमुख हैं। कार्ल पॉपर की आलोचना आज सबसे सशक्त तथा पूर्ण मानी जाती है। जिसका उनके ग्रन्थों में उल्लेख मिलता है। पॉपर मार्क्सवाद को कट्टर विचारों की बन्द व्यवस्था मानते हैं जो स्वतन्त्र समाज का दुश्मन है।

मार्क्स के विचारों की निम्नलिखित तर्कों के आधार पर आलोचना की जाती है :

1. **मुक्त समाज का दुश्मन**—कार्ल पॉपर ने अपनी प्रसिद्ध रचना 'दि ओपन सोसायटी एण्ड इट्स एनिमीज' में मार्क्सवाद को 'मुक्त समाज' का दुश्मन ठहराया है जो व्यक्ति की स्वतन्त्रता को नष्ट कर देता है और उसके व्यक्तित्व के विकास में बाधक है।

2. **हिंसा को बढ़ावा देना**—मार्क्स के दर्शन की इस आधार पर भी आलोचना की जाती है कि वह क्रान्ति का सन्देश देकर हिंसा को बढ़ावा देता है, वर्ग संघर्ष का प्रचार करके वर्ग सहयोग की सम्भावनाएं समाप्त कर देना चाहता है।

3. **अधिनायकवाद को प्रोत्साहन**—मार्क्सवाद के विरुद्ध सबसे बड़ा आरोप यह है कि साम्यवादी समाज की कल्पना चाहे कितनी ही मधुर क्यों न हो, व्यवहार में वह सर्वहारा के अधिनायकतन्त्र या निरे 'अधिनायकतन्त्र' की स्थापना करता है। **सोवियत रूस और चीन में साम्यवादी क्रान्तियों के फलस्वरूप जो व्यवस्थाएं अस्तित्व में आयीं, उन्होंने आर्थिक, वैज्ञानिक, तकनीकी और सैनिक प्रगति का चाहे कितना ही बड़ा प्रमाण क्यों न दिया हो,**

Scanned with CamScanner

वहां के नागरिक चिरकाल तक 'अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता' से वंचित ही रहे। सिद्धान्ततः सोवियत शासन प्रणाली का अधिनायकतन्त्रीय स्वरूप अस्थायी होना चाहिए था, परन्तु वहां पर आर्थिक और सांस्कृतिक गतिविधियों के बढ़ते हुए केन्द्रीकरण ने 'राज्यविहीन समाज' की कल्पना को पीछे धकेल दिया।

4. **भविष्यवाणियां गलत साबित होना—मार्क्स की अधिकांश भविष्यवाणियां गलत साबित हुई हैं।** मार्क्स के ग्रन्थ 'दास कैपीटल' को सौ से भी अधिक वर्ष हो चुके हैं, किन्तु पूंजीवाद के विध्वंस और राज्य के लोप होने की भविष्यवाणी सच नहीं निकली, धनी अधिक धनी और निर्धन अधिक निर्धन नहीं हुए हैं, मध्यम वर्ग का लोप होने के स्थान पर उसकी संख्या तथा प्रभाव में वृद्धि हुई।

5. **इतिहास की मनमानी व्याख्या**—आलोचकों के अनुसार मार्क्स ने इतिहास की मनमानी व्याख्या की है। उसने द्वन्द्वात्मक पद्धति और वर्ग संघर्ष के सिद्धान्त के आधार पर मानव इतिहास को पांच कालों में बांटा है। **एक्टन ने कहा है कि पिछले एक सौ वर्ष पुराने इतिहास के अनुभव के आधार पर हजार वर्ष के पुराने इतिहास की व्याख्या करना सन्तोषजनक नहीं है।** मार्क्स की सबसे बड़ी भूल यह है कि पूंजीवाद के पिछले सौ वर्ष के ऐतिहासिक विकास के आधार पर उसने समूचे इतिहास का गलत और मनमाना युग विभाजन कर दिया।

6. **धर्म की उपेक्षा**—मार्क्स ने धर्म जैसे तत्व की उपेक्षा की है। उसने धर्म को जनता के लिए अफीम कहा है। उसके विचारों में धर्म का कोई स्थान नहीं है।

7. **राज्य सम्बन्धी भ्रांत धारणा**—मार्क्स की यह कल्पना गलत है कि राज्य अपने आप धीरे-धीरे समाप्त हो जाएगा। वास्तविकता तो यह है कि आजकल साम्यवादी देशों में राज्य के अधिकार और उसकी शक्ति दिन प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं। मार्क्सवादी अगले दरवाजे से राज्य को बाहर निकालता है तो पिछले दरवाजे से उसे किसी अन्य रूप में वापस ले आता है।

मार्क्स की पुस्तक 'दास कैपीटल' की आलोचना करते हुए कीन्स ने लिखा है, "**मार्क्स का ग्रन्थ, 'कैपीटल' रद्द की गई पाठ्यपुस्तक है। वह वैज्ञानिक दृष्टिकोण से ही असत्य नहीं है, आधुनिक संसार में न इसकी कोई उपयोगिता है और न लोगों की इसमें रुचि है।**" कार्ल पॉपर ने दार्शनिक आधार पर मार्क्सवाद को विचारों की कट्टरता (Dogmatism) तथा इतिहासवाद (Historicism) की संज्ञा दी है। हण्ट ने मार्क्स के अतिरिक्त मूल्य के सिद्धान्त के विषय में लिखा है कि यह वास्तव में मूल्य का सिद्धान्त न होकर शोषण का सिद्धान्त है। **लिण्डसे के अनुसार उसने जिस पूंजीवाद का वर्णन किया है वह एक 'काल्पनिक पूंजीवाद'** (Hypothetical Capitalism) **है, उसका वास्तविक जगत से कोई सम्बन्ध नहीं है।**

आलोचकों के अनुसार मार्क्स में न तो मौलिकता है और न ही भावी समाज का उसने स्पष्ट चित्र खींचा है। मार्क्स ने अपने प्रायः सभी विचारों को दूसरों से ग्रहण किया है। उसका मजदूरों से भी कम सम्बन्ध था, उसका सम्बन्ध बुद्धिवादी निर्वासित क्रान्तिकारियों तथा अन्तर्राष्ट्रीय षड्यन्त्रकारियों से ही था। उसने अपना ज्ञान मजदूरों में रहकर नहीं अपितु ब्रिटिश म्यूजियम के पुस्तकालय में बैठकर सरकारी रिपोर्टों और पुस्तकों से प्राप्त किया था।

मार्क्स का योगदान
(CONTRIBUTION OF MARX)

मार्क्सवाद आधुनिक युग का अत्यन्त प्रभावशाली एवं वैज्ञानिक सामाजिक दर्शन है। जितना मार्क्स के विचारों ने सामाजिक आर्थिक एवं राजनीतिक क्षेत्र को प्रभावित किया सम्भवतः उतना अन्य किसी दार्शनिक के विचारों ने नहीं। मार्क्सवाद दार्शनिक होने की अपेक्षा व्यावहारिक अधिक है। यह पूंजीवादी शोषण को समाप्त करने के लिए श्रमिकों के समक्ष एक विश्लेषणात्मक पद्धति है। मार्क्सवादी समाजवाद वैज्ञानिक है तथा यह तथ्यों पर आधारित है। वह व्यावहारिक है तथा स्फूर्ति देने वाला है। ईसाह बर्लिन ने लिखा है—"**29वीं शताब्दी में बहुत से प्रभावशाली आलोचक तथा क्रान्तिकारी हुए हैं; जो मौलिकता, क्रान्ति तथा सिद्धान्तवादिता में मार्क्स से कम नहीं थे, परन्तु उनमें से मार्क्स की भांति एकाग्रचित्त वाला अपने जीवन का प्रत्येक शब्द तथा कार्य साधन रूप में अपने एक तात्कालिक तथा व्यावहारिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए बलिदान करने वाला कोई नहीं था।**" सी. एल. वेपर ने मार्क्स को सबसे अधिक प्रभावशाली दार्शनिक कहा है। वेपर के अनुसार मार्क्स द्वारा दिया गया विश्व का विश्लेषण तो श्रेष्ठ है ही, उससे भी अधिक प्रशंसनीय है ऐतिहासिक शक्तियों की रचनात्मकता के सम्बन्ध में मार्क्स का दृष्टिकोण। मैक्सी के अनुसार, "**समाजवाद को वैज्ञानिक रूप देना मार्क्स के माने हुए**

Scanned with CamScanner

सिद्धान्तों में से था। उसने साम्यवाद को केवल वैज्ञानिक आधार ही प्रदान नहीं किया वरन् उसे विशाल शक्ति प्रदान की।'' केटलिन के अनुसार, ''मार्क्स ने समाजवादी आन्दोलन के लिए वह कुछ किया जो मैकियावेली ने राज्य सिद्धान्त के लिए किया।'' लेनिन के शब्दों में, ''**केवल मार्क्स के भौतिकवादी दर्शन ने ही सर्वहारा वर्ग को उस आत्मिक दासता से मुक्ति पाने का मार्ग दिखाया है, जिसमें सभी उत्पीड़ित वर्ग अब तक सिसकते हुए अपने दिन काट रहे थे। केवल मार्क्स के आर्थिक सिद्धान्त ने ही पूंजीवाद की सामान्य व्यवस्था में सर्वहारा वर्ग की वास्तविक स्थिति की व्याख्या की है।**''

मार्क्स ने वर्ग संघर्ष तथा सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व के सिद्धान्त को प्रतिपादित करके श्रमिक वर्ग को पर्याप्त स्फूर्ति प्रदान की है। मार्क्स का अतिरिक्त मूल्य का सिद्धान्त अर्थशास्त्र का महत्वपूर्ण भाग है। साथ ही उसने इतिहास की भौतिक एवं आर्थिक व्याख्या करके विश्व को एक नवीन दिशा प्रदान की है। लेनिन के शब्दों में, ''मार्क्स की शिक्षा सर्वशक्तिमान है, क्योंकि वह सत्य है। वह व्यापक तथा सुसंगत है और मनुष्य को एक ऐसा अखण्ड विश्व दृष्टिकोण प्रदान करती है, जो किसी भी प्रकार के अन्धविश्वास, प्रतिक्रियावादी प्रवृत्ति पर बुर्जुआ उत्पीड़न की किसी भी वकालत की कट्टर विरोधी है।''

संक्षेप में, मार्क्सवाद एक प्रगतिशील दर्शन है जिसका मुख्य सन्देश यह है कि सामाजिक अन्याय की जड़ें समाज व्यवस्था के अन्तर्गत ढूंढनी चाहिए और वहीं उसका प्रतिकार भी करना चाहिए। मार्क्स के सिद्धान्तों को 19वीं एवं 20वीं शताब्दी में जितनी लोकप्रियता एवं सफलता मिली उतनी अन्य किसी विचारधारा को नहीं मिली। आज दुनिया के करोड़ों लोग कार्ल मार्क्स को अपना आराध्य देव मानते हैं, सभी देशों में साम्यवादी दल सक्रिय हैं और सभी सरकारें किसी न किसी रूप में समाजवादी नीतियां अपनाने के लिए कटिबद्ध हैं।

कार्ल-मार्क्स को आधुनिक समाजवादी विचारधारा का पिता माना जाता है। उसने जीवन-पर्यन्त समाजवादी साहित्य की रचना की। **उसने विश्व को न केवल नवीन क्रान्तिकारी विचारधारा दी वरन् उस विचारधारा के द्वारा विश्व के इतिहास की दिशा तक बदल दी।** वैसे तो मार्क्स से पहले भी कई विद्वानों ने समाजवादी विचार व्यक्त किये थे, उनमें प्लेटो, नायल वाबेफ, सेण्ट साइमन, चार्ल्स फोरियर, लुई ब्लाक, विलियम थाम्पसन, रॉबर्ट ओवन, डॉ हॉल तथा जॉन दी डिसमेण्टी आदि प्रमुख हैं। ये विचारक पूंजीवादी व्यवस्था में विद्यमान धन की विषमता, स्वतन्त्र प्रतियोगिता और आर्थिक क्षेत्र राज्य की अहस्तक्षेप-नीति के कटु आलोचक थे। ये आर्थिक विषमता के स्थान पर समाज में धन के न्यायोचित वितरण पर बल देते थे, **किन्तु उन्होंने यह नहीं बताया कि यह विषमता किन कारणों से होती है और उसका उत्पादन की विधियों के साथ क्या सम्बन्ध है। उन्होंने समाज की प्रगति और विकास के नियमों को समझाने का प्रयत्न नहीं किया।** इन लेखकों के द्वारा न तो परिवर्तित घटनाचक्र की कोई व्याख्या प्रस्तुत की गयी थी और न ही विद्यमान अवस्था को सुधारने के लिए क्रियात्मक व्यावहारिक दर्शन प्रदान किया गया था। इसलिए ही मार्क्स के पूर्व के समाजवादियों को **'स्वप्नलोकीय समाजवादी'** (Utopian Socialist) कहा जाता है। किन्तु वैज्ञानिक समाजवादी विचारधारा के जनक और प्रणेता मार्क्स ही माने जाते हैं।

कार्ल मार्क्स के प्रसिद्ध विचार
(POPULAR THOUGHTS OF KARL MARX)

- दुनिया के मजदूरों के पास अपनी जंजीर के अलावा खोने के लिए कुछ भी नहीं है, दुनिया के मजदूरों एक हो।
- समाज व्यक्तियों से मिलकर नहीं बनता है, बल्कि उनके अंतर्संबंधों का योग होता है, इन्हीं संबंधों के भीतर ये व्यक्ति खड़े होते हैं।
- औद्योगिक रूप से अधिक विकसित देश, कम विकसित की तुलना में, अपने स्वयं के भविष्य की छवि दिखाते हैं।
- पूंजीवादी उत्पादन इसलिए औद्योगिकी विकसित करता है और विभिन्न प्रक्रियाओं को एक पूर्ण समाज के रूप में में संयोजित करता है, केवल सम्पत्ति के मूल स्रोतों जमीन और मजदूर की जमीन खोदकर।
- जमींदार, सभी अन्य लोगों की तरह, वैसी फसल काटना पसंद करते हैं जिसे कभी बोया ही नहीं।
- इतिहास खुद को दोहराता है पहली त्रासदी के रूप में, दूसरा प्रहसन के रूप में।

- लोकतंत्र समाजवाद का मार्ग होता है।
- कई उपयोगी चीजों का उत्पादन कई बेकार लोगों को भी उत्पन्न करता है।
- संयोग से निपटने के लिए धर्म मानव मन की नपुंसकता है जिसे वह नहीं समझ सकता।
- पूंजी मृत श्रम है जो पिशाच की तरह है, जो केवल श्रम चूसकर ही चिन्दा रहता है और जितना अधिक जीता है उतना ही श्रम चूसता है।

प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. कार्ल मार्क्स के जीवन पर एक संक्षिप्त लेख लिखिए।
2. हीगल ने मार्क्स को किस प्रकार प्रभावित किया। विवेचना कीजिए।
3. कार्ल मार्क्स के समाजशास्त्रीय योगदान का उल्लेख कीजिए।
4. कार्ल मार्क्स के जीवन एवं कृतियों की विवेचना कीजिए।
5. मार्क्स के ऐतिहासिक भौतिकवाद को समझाइए।
6. कार्ल मार्क्स ने इतिहास का काल-विभाजन किस प्रकार से किया है, समझाइए।
7. मार्क्स द्वारा प्रस्तुत इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या की आलोचनात्मक दृष्टिकोण से व्याख्या कीजिए।
8. मार्क्स ने इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या किस प्रकार से की है? स्पष्ट कीजिए।
9. ऐतिहासिक भौतिकवाद के प्रमुख पहलुओं की विवेचना कीजिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. मार्क्स की प्रमुख कृतियों के नाम लिखिए।
2. इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या का अर्थ बताइए।
3. मार्क्स के ऐतिहासिक भौतिकवाद के प्रमुख पहलुओं को बताइए।
4. मार्क्स द्वारा प्रस्तुत ऐतिहासिक भौतिकवाद की आलोचना संक्षेप में कीजिए।
5. टिप्पणी लिखिए :
   (i) द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद।
   (ii) भौतिक निर्धारणवाद।
   (iii) संघर्ष एवं द्वन्द्ववाद।
   (iv) मात्रात्मक परिवर्तन से गुणात्मक परिवर्तन।
   (v) हीगल के द्वन्द्ववाद की कोई दो विशेषताएं।
   (vi) मार्क्स के द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद की दो विशेषताएं।
6. निम्नांकित में से सही/गलत कथन चुनिए :
   (अ) कार्ल मार्क्स का जन्म सन् 1818 में हुआ।
   (ब) ब्रुसेल्स में मार्क्स ऐंजिल्स ने 1837 में कम्युनिस्ट लीग की स्थापना की।
   (स) 'दा होली फेमिली' पुस्तक के लेखक मैक्स वेबर हैं।
   (द) मार्क्स ने 'द्वन्द्व' का विचार हीगल से ग्रहण किया।
   (य) मार्क्स धर्म के कट्टर समर्थक थे।
   (र) मार्क्स के सह-लेखक एवं अच्छे मित्र का नाम ऐंजिल्स है।
   (ल) मार्क्स फ्रांस के निवासी थे।
   [उत्तर : सही कथन—(अ), (द), (र)। **गलत कथन**—(ब), (स), (य), (ल)]

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'वैज्ञानिक समाजवाद का पिता' कहते हैं :
   (अ) लेनिन को (ब) स्टालिन को
   (स) ट्राटस्की को (द) कार्ल मार्क्स को
2. अन्तर्राष्ट्रीय सर्वहारा वर्ग का महान शिक्षक एवं नेता कहा जाता है :
   (अ) लेनिन को (ब) वेबलिन को
   (स) कार्ल मार्क्स को (द) हीगल को

Scanned with CamScanner